पाठ्यक्रम पुस्तिका

(बी.एच.एड)

शिक्षा वर्ष–2015 से……………

हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान

कटक

(क) : शिक्षा के दृष्टिकोण

P.E.– (PERSPECTIVES IN EDUCATION)

P.E.-1 : शिक्षा, विद्यालय और समाज

(Education, School and Society)

Year-I	Credit-4
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

पूर्णांक –100

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाएँ

- शिक्षा के संकुचित तथा व्यापक अर्थ समझने के साथ-साथ अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे ।
- शिक्षा की विभिन्न रीतियों तथा प्रक्रियाओं को पहचान सकेंगे ।
- विभिन्न शिक्षा-आयोग, शिक्षा-नीति तथा शिक्षा दार्शनिकों के द्वारा संस्तुत किए गए शिक्षा के मौलिक सिद्धांतों और उद्देश्यों को समझ सकेंगे ।
- विद्यालय एवं शिक्षा, विद्यालय और समुदाय तथा शिक्षा-समाज-संस्कृति के सह-संबंधों को समझ सकेंगे ।
- राष्ट्रीय विकास एवं शिक्षा के अंतः संबंध को विस्तार से समझ सकेंगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई–1. **शिक्षा की अवधारणा :** (Understanding Education)

- अर्थ : शाब्दिक, संकुचित, व्यापक अर्थ, भारतीय और पाश्चात्य विचारधारा ।
- शिक्षा की प्रक्रिया : द्विमुखी, त्रिमुखी, बहुमुखी और आजीवन प्रक्रिया ।
- शिक्षा के प्रकार : औपचारिक, संस्थागत, अनौपचारिक, आनुषंगिक और गैर-औपचारिक शिक्षा ।
- शिक्षा के उद्देश्य : वैयक्तिक एवं सामाजिक ।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-1953), शिक्षा आयोग (1964-1966), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986-1992), राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (NCF : 2005)के आधार पर शिक्षा के उद्देश्य ।

इकाई : 2 : शिक्षा के आधार : (Foundations of Education)

- दर्शन व शिक्षा : अर्थ एवं सहसबंध, शिक्षा के उद्देश्यों पर दर्शन शास्त्र का प्रभाव, पाठ्यचर्चा एवं शिक्षण विधि ।
- समाज शास्त्र व शिक्षा : अर्थ एवं सहसंबंध, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्चा और शिक्षण विधियों पर समाजशास्त्र का प्रभाव ।
- मनोविज्ञान व शिक्षा : अर्थ और सहसंबंध, विषय सूची और शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में मनोविज्ञान का प्रभाव (अध्येता को समझना, शिक्षा, शिक्षक की विशेषताएँ और भाषा शिक्षण) ।
- शिक्षा शास्त्रियों की विचारधारा : महात्मा गांधी, टैगोर, श्री अरविंद, रूसो, जॉन डीवी और फ्रेरी (शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, और शिक्षण विधियों के संदर्भ में) ।

इकाई : 3 : शिक्षा व विद्यालय : (Education and School)

- शिक्षा के औपचारिक अभिकरण के रूप में विद्यालय, उद्देश्य (सामाजिक, सांस्कृतिक), अवस्थिति, (आधारिक संचरना और समय) (प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के संचालक तथा विभिन्न कार्यक्रम) ।
- विद्यालय के क्रिया -कलाप : पाठ्यचर्या और अन्य पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, उपादान, विद्यालय का संगठन और संचालन ।
- विद्यालय का परिवेश : मैत्रीपूर्ण परिवेश में अध्येता और अधिगम की विशेषताएँ और उसके उपादान, मैत्रीपूर्ण परिवेश में अधिगम की युक्तियाँ ।
- आवश्यकीय संसाधन : ज्ञान, मानवीय संसाधन, सामग्री, आधारिक संरचना, तकनीकी संसाधन, उनके स्त्रोत और प्रयोग ।
- विद्यालय और समुदाय का अंतःसंबंध : महत्व, अंतःसंबंध के पक्ष, अंतः-संबंध को शक्तिशाली करने की युक्तियाँ, सीखने वाले समुदाय के निर्माण में उनकी भूमिका ।

इकाई : 4 : शिक्षा, समाज एवं संस्कृति : (Education, Society and Culture)

- व्यवस्था के रूप में समाज : उपव्यवस्था के रूप में शिक्षा और संस्कृति तथा उनका अन्तः संबंध ।
- सामाजिक परिवर्तन में साधन के रूप में शिक्षा का अर्थ, आयाम और प्रकार : सामाजिक परिवर्तन और नियंत्रण पर शिक्षा का प्रभाव तथा सामाजिक परिवर्तन का शिक्षा पर प्रभाव ।
- शिक्षा और आधुनिकीकरण : अर्थ, आधुनिक समाज की विशेषताएँ, आधुनिकीकरण की अनुकूलित माँगें और शिक्षा की भूमिका ।
- शिक्षा और संस्कृति : अर्थ, संस्कृति के तत्व : परिरक्षण, प्रसारण और संस्कृति के संवर्धन में शिक्षा की भूमिका, शिक्षा पर संस्कृति का सामान्य प्रभाव और अर्थपूर्ण अधिगम के विकास पर विशेष प्रभाव ।

इकाई : 5 : शिक्षा व राष्ट्रीय विकास : (Education and National Development)

- राष्ट्रीय विकास : आयाम और सूचक ।
- मानव संसाधन तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए शिक्षा ।
- पर्यावरण के विकास के लिए शिक्षा ।
- संलग्नक विकास के लिए शिक्षा : आयाम (सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, तकनीकी, भौगोलिक) संलग्नक विकास की युक्तियाँ, शिक्षा की भूमिका ।
- संघर्ष, विद्रोह, राष्ट्रीय विपत्ति और विनाश की भयंकर स्थितियों को नियंत्रण करने के लिए शिक्षा की भूमिका ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किन्हीं दो सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है :

- शिक्षा आयोग, शिक्षा नीति एवं शिक्षा दार्शनिकों के द्वारा संस्तुत शिक्षा के उद्देश्यों पर एक तुलनात्मक विश्लेषण करके लेख प्रस्तुत करना है ।
- सांप्रतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में किसी एक शिक्षा शास्त्री के शैक्षिक उद्देश्य तथा पाठ्यचर्या की समीक्षा करनी है ।
- विद्यालयीन शिक्षा के विकास के लिए समुदाय में उपलब्ध संसाधनों का सर्वेक्षण करके रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- अपने समुदाय के आधुनिकीकरण में विद्यालय के उत्तरदायित्व पर एक लेख प्रस्तुत करना है ।
- भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विद्यालय-समुदाय के अन्तःसंबंध पर एक कार्य-योजना प्रस्तुत करनी है ।

प्रस्तावित पाठ्य :

१. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत-पी.डी. पाठक व त्यागी, विनोद पुस्तक मंदिर, अगरा ।
२. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत–एसी.पी.चौबे
३. शिक्षा के तात्विक सिद्धांत-एस.के. अग्रवाल
४. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ–भाई योगेन्द्रजीत
५. भारतीय शिक्षा का इतिहास–डी.पी.जौहरी, पाठक
६. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 भारत सरकार, नई दिल्ली ।
७. भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्याएँ–
८. राष्ट्रीय शिक्षा–रामशकल पांडेय ।
९. भारत में शिक्षा का विकास–के.के.अग्रवाल
१०. उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा–ओ.बी.शर्मा

- Anand, C.L.et.al. (1983). *Teacher and education in emerging in Indian society,* New Delhi, NCERT.
- Clarke. P. (2001). *Teaching and Learning : The Culture of pedagogy.* New Delhi: Sage Publication.
- Dewey. John (1916/1977). *Democracy and education.* New York:MacMillan.
- Dewey. John (1956). *The child and the curriculum, school and society.* Chicago, Illinois: University of Chicago Press.
- Dewey, John (1977). *Experience and education.* New York:Touchstone.

- Ganesh, Kamala & Thakkar, Usha(Ed.) (2005). *Culture and making of identity in India* New Delhi: Sage Publication.
- Govt. of India (1986/92). *National policy on education.* New Delhi: MHRD.
- Krishnamurthy. J. (1947) *On education,* New Delhi: Orient Longman.,
- Krishnamurty, J. (1953). *Education and significance of life.* New Delhi : B.I. Publication.
- Kumar Krishna (1996). *Learning from conflict.* New Delhi : Orient Longman.
- Margaret, K.T. (1999). *The open classroom.* New Delhi: Orient Longman.
- Ministry of Education (1966). *Education and national development.* New Delhi. Ministry of Education, Government of India.
- Ministry of Human Resource Development (2004). *Learning without Burden: Report of the National Advisory Committee.* New Delhi: Min. of HRD.
- Mukherji, S.M., (1996). *History of education in India.* Vododara: Acharya Book Dept.
- Naik, J.P. and Syed, N., (1974). A student's history of education in India, New Delhi, Macmillan
- NCERT (2005). *National curriculum framework 2005.* New Delhi: National Council of Educational Research and Trainging.
- Ornstein, Allan C. & Levine, Daniel U. (1989). *Foundations of education* (4th Edn.), Boston: Houghton Mifflin Co.
- Pathak, Avijit (2002). *Social implications of schooling.* New Delhi: Rainbow Publishers.
- Peters, R.S. (1967). *The Concept of education.* London: Routledge Kegan & Paul.
- Salamatullah, (1979). *Education in social context.* New Delhi; NCERT.
- Saraswati, T.S. (Ed.)(1999). Culture, Socialization and human development. Theory, research and applications in India. New Delhi: Sage Publication.
- Srinivas, M.N., (1986). Social changes in Modern India. Bombay: Allied Publishers.

❑❑❑

PE-2 : वाल्यावस्था और विकास

(Childhood & Growing up)

Year-I	Credit-4
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

पूर्णांक −100

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- शिशु की अभिवृद्धि और विकास की संकल्पना तथा मूलभूत सिद्धांतों को समझ सकेंगे ।
- अभिवृद्धि और विकास की प्रत्येक अवधि और प्ररूपी विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे ।
- विकास को प्रभावित करने वाले संदर्भों और घटकों का विस्तार से वर्णन कर सकेंगे ।
- सामाजिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक और भाषाई विकास के सिद्धांतों तथा शैक्षिक तात्पर्य को समझ सकेंगे ।
- शैशवावस्था के विकास की विशेषताओं तथा कक्षा-कार्य में उनकी प्रासंगिकता का वर्णन कर सकेंगे ।
- किशोरावस्था में विकासात्मक विशेषताओं, संदर्भगत आवश्यकताओं और कार्यों को समझ सकेंगे । साथ ही साथ वे विकास की इस अवधि में आई चुनौतियों पर विद्यालय और शिक्षक की भूमिका जान सकेंगे ।
- वैयक्तिक भिन्नताओं के विभिन्न रूपों और विशेषताओं तथा इन भिन्नताओं के कारण उत्पन्न कक्षा-समस्याओं को दूर करने के उपाय बता सकेंगे ।
- विकास के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान कर सकेंगे, तथा इनको दूर करने के लिए विद्यालय और विद्यालय के बाहर उपयुक्त युक्यिों के प्रयोगों की पहचान कर सकेंगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : अध्येता के विकास (Understanding Learner Development)

- अभिवृद्धि और विकास : विकास की संकल्पना और उनके सामान्य सिद्धांत विकास के सोपान : संकल्पना (आनुक्रमिक, संरचनात्मक पहचान, संकटपूर्ण समय, अनुकूल और प्रतिकूल प्रक्रियाएँ, मानव के अभिवृद्धि और विकास की विभिन्न अवस्थाएँ (शैशवावस्था, वाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था ।
- विकास के संदर्भ : सामाजिक, अर्थनैतिक, प्रति-सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और नृशास्त्रीय ।
- विकास को प्रभावित करने वाले उपादान : वंशानुक्रम, पर्यावरण, पोषण, शिशु के पालन-पोषण का अभ्यास, सामाजिक - अर्थनैतिक स्तर, सगे भाई-बहन और समकक्षी ।

इकाई : 2 : वाल्यवस्था और किशोरावस्था के विकास के सिद्धांत :

(Theories of Child & Adolescent Development)

- सामाजिक-संवेगात्मक विकास : एरिक्सन के मनो-सामाजिक विकास का सिद्धांत, जीन पियाजे का सामाजिक व्यवहार के विकास का सिद्धांत ।
- संज्ञानात्मक और भाषाई विकास : पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सोपान, विगोत्स्की के संकल्पनात्मक और भाषाई विकास के सिद्धांत, नोम चौमस्की के भाषाई विकास का सिद्धांत, सैद्धांतिक रूपरेखा और इसका शैक्षिक तात्पर्य ।
- वाल्यावस्था में विकासात्मक विशेषताएँ : शारीरिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और संवेगात्मक; विद्यालय और शिक्षकों की भूमिका ।

इकाई : 3 : किशोरावस्था में विकासात्मक विशेषताएँ और आवश्यकताएँ ।

(Developmental Characterstics & needs during Adolescence)

- किशोरावस्था में अभिवृद्धि और विकास : पूर्ववर्ती और परवर्ती किशोरावस्था की विशेषताएँ : शारीरिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक, भाषाई-संवेगात्मक और नैतिक, किशोरावस्था की चुनौतियाँ ।

- किशोरावस्था में विशिष्ट आवश्यकताओं और समस्याओं पर आधारित संदर्भगत विशिष्ट विकासात्मक कार्य और समायोजन की समस्याएँ ।
- विभिन्न संदर्भों में किशोरों की विकासात्मक आवश्यकताओं की चुनौतियाँ पहचानने में शिक्षक और विद्यालय की भूमिका ।

इकाई : 4 : अध्येताओं में वैयक्तिक भिन्नताएँ :

(Understanding Individual Differences among Learners)

- संज्ञनात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक विशेषताओं के कारण, वैयक्तिक भिन्नताएँ, मानसिक दक्षता, अधिगम अनुपात, उत्प्रेरण, अधिगम शैली, अभिवृत्ति के कारण, अधिगम में वैयक्तिक भिन्नताएँ, अध्यतेओं के स्वतंत्र लक्षण की पहचान ।
- विभिन्न सामाजिक दक्षता युक्त अध्येता : बुद्धि, संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता : उनकी संकल्पना, स्वरूप और मूल्य-निर्धारण, मानसिक दक्षता पर आधारित अध्येताओं का वर्गीकरण ।
- अधिगम में वैयक्तिक भिन्नताओं का प्रबंधन, विभिन्न प्रकार के अध्येताओं की शैक्षिक आवश्यकताएँ : विभिन्न प्रकार के अध्येता (प्रतिभाशाली-मंदबुद्धि, तीव्र और मंदगति वाले) ।

इकाई : 5 : अधिगम की आवश्यकताएँ :

(Addressing Learning Needs)

- विकास के विभिन्न सोपानों और संदर्भों में अध्येताओं की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान (सामाजिक-अर्थनैतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनैतिक, स्वतंत्र आवश्यकतावाले अध्येता) ।
- विद्यालय के भीतर तथा बाहर अध्येताओं के अधिगम की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए युक्तियाँ ।
  विषमजातीय कक्षा में अधिगम का संघटन, दक्षतानुसार दल-विभाजन, विषम जातीय दल विभाजन, रुचि और पसंद के अनुसार दल-विभाजन, कक्षा में वैयक्तिक भिन्नताओं की पहचान, वैयक्तिक निर्देशन द्वारा अधिगम, समकक्षी अधिगम, सहकारी और सहयोगमूलक अधिगम आदि ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किन्हीं दो विषयों पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य हैं :

- किसी समस्यात्मक बालक/मंदगति से पढ़ने वाले बालक/असुविधाजनक स्थिति में रहे बालक का व्यक्ति वृत्त का अध्ययन (Case-study) प्रस्तुत करना है ।
- दलगत बुद्धि परीक्षण के संचालन- परिणामों पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- किन्हीं पाँच छात्राध्यापकों के कक्षा-निष्पादन पर मूल्य -निर्धारण प्रस्तुत करना है ।
- कक्षा में उपलब्ध सामान्य व्यवहारगत समस्याओं के विश्लेषण और समाधान पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- विद्यालय के अध्येताओं में सृजनात्मकता के विकास के लिए पाँच क्रिया-कलापों पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।

प्रस्तावित पाठ्य :

१. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा–एस.पी.चौबे

२. शिक्षा मनोविज्ञान-के.पी.पांडे, देवा हाउस, दिल्ली

३. मनोभाषा विकास–शास्त्री व शर्मा, के.हिं.सं, आगरा

४. साइकोलॉजी ऑफ एडोलसेंट–एस.एस.चौहान

५. शिक्षा मनोविज्ञान–डाँ एस.एस. माथुर, डॉ० पी.डी. पाठक

६. शिक्षण अधिगम के सिद्धांत-महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

७. शिक्षण और अधिगम का मनोविज्ञान–आर.के.मिश्र

८. अधिगम का मनोविज्ञान–रामपाल सिंह

- Amett, Jeffrey (2007). *Adolescence and emerging adulthood: A Cultural approach.* (3rd Edn.). Upper Saddle River, N.J. : Pearson
- Berk, Laura E. (2011). *Child development* (9th Edn.). New Delhi: Prentice Hall of India.
- Chauhan, S.S. (1978). *Advanced educational psychology.* New Delhi: Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
- Dash, M. and Dash, N. (2006). *Fundamentals of educational psychology.* New Delhi: Atlantic.
- Flavell, J.H. (1963), *The developmental psychology of Jean Piaget.* New York: Van Nostrand
- Hurlock, E.B. (1980). *Development psychology: All span approach.* New York: McGraw Hill Book.

- Hurlock, E.B. (1980). *Child developmental* (6th Edn.) Tokyo; McGraw-Hill, Kogakusha Ltd.
- Hurlock. E.B. (2007). *Child growth and development.* New York: McGraw Hill.
- Kail, Robert V (2011). *Children and their development* (6th Edition). Englewood Cliffs, N.J: Prentice Hall.
- Nolen-Hoeksema, Susan, Fredrickson, Barbara L., Loftus, Geoff R., & Wagenaar, Willem, A. (2014). *Atkinson & Hilgard's Introduction to Psychology.* Belmont, California: Wadsworth
- Saraswathi, T.S. (Ed.). (1999). *Culture, Socialization and Human Development : Theory, Research and Applications in India.* New Delhi: Sage Publication.
- Stephens, J.M.; Evans, E.D. (1973). *Development and Classroom learning; An introduction to educational psychology.* New York: Holt, Rinehart and Winston.

❑❑❑

PE-3 : अधिगम और शिक्षण

(Learning & Teaching)

Year-I	Credit-4
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम भी समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ

- अधिगम के अर्थ, स्वरूप, आयाम और मूल शर्तों को समझ सकेंगे ।
- अधिगम के व्यवहारात्मक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और निर्माणात्मक व्यापक विचारों व उनके तात्पर्यों की चर्चा कर सकेंगे ।
- विद्यालय के भीतर और बाहर अर्थ पूर्ण अधिगम की प्रक्रिया और सरलीकरण के उपायों को समझ सकेंगे ।
- अर्थपूर्ण अधिगम के लिए शिक्षण की प्रक्रियाओं का उपयोग और कक्षा की विभिन्न स्थितियों का प्रबंधन कर सकेंगे ।
- शिक्षक की वृत्ति की वृत्तिगत नीति के संदर्भ में शिक्षक की तैयारी की प्रक्रिया और निरंतर विकास को विस्तार से प्रतिपादित कर सकेंगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : अधिगम प्रक्रिया : (Understanding Learning Process)

- अधिगम का अर्थ, स्वरूप, आयाम, प्रक्रिया और परिणाम के रूप में अधिगम ।
- अधिगम की मूल शर्तें :परिपक्वता, तत्परता, ध्यान, उत्प्रेरण, थकान, सामग्री, अधिगम की शैली, कार्य और विधियाँ ।
- अधिगम का विभागीकरण : गाग्ने का अधिगम विभागीकरण ।

इकाई : 2 : अधिगम का सैद्धांतिक दृष्टिकोण : (Theorectical Perspectives of Learning)

- व्यवहारवादी सिद्धांत : पावलव का शास्त्रीय प्रतिबंधित सिद्धांत, स्कीनर का आपरेंट प्रतिबंधित सिद्धांत, सौद्धांतिक रूपरेखा और शैक्षिक तात्पर्य ।
- सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत, बांदुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत, असुबल का विकसित सांगठनिक सिद्धांत, सैद्धांतिक रूपरेखा और शैक्षिक तात्पर्य ।
- निर्माणवाद सिद्धांत : जीन पियाजे का अतिवादी निर्माणवाद, लेव विगोत्स्की का सामाजिक निर्माणवाद, सैद्धांतिक रूपरेखा और शैक्षिक तात्पर्य ।

इकाई : 3 : अर्थपूर्ण अधिगम : (Meaningful Learning)

- अर्थ और विशेषताएँ : सक्रिय या हस्तकुशलतामूलक, निर्माणपरक, चिंतनशील, साभिप्राय, जटिल, प्रासंगिक, सहयोगमूलक, संप्रेषणीय ।
- अर्थ-निर्माण के रूप में अधिगम : अर्थ-निर्माण की संकल्पना और प्रक्रिया, अर्थ-निर्माता के रूप में अध्येता और उसकी विशिष्टताएँ : जिज्ञासा, रुचि, सक्रियता, अर्थ-निर्माण में अनुसंधान की भूमिका ।
- अनुभूति के रूप में अर्थपूर्ण अधिगम निरीक्षण, इन्द्रियों द्वारा बोधगम्यता, अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान, अनुभूति द्वारा अर्थ निकालना ।
- विद्यालय के भीतर और बाहर अर्थपूर्ण अधिगम का सरलीकरण, युक्तियाँ और शिक्षकों की भूमिका ।

इकाई : 4 : अर्थपूर्ण अधिगम के लिए शिक्षण : (Teaching for Meaningful Learning)

- शिक्षण और अधिगम : अनुदेश प्रदान करने के रूप में शिक्षण बनाम अधिगम को सरल बनाने के रूप में शिक्षण, अध्येता को समर्थ बनाने के रूप में शिक्षण, अर्थपूर्ण अधिगम के लिए ब्रूनर का शिक्षण मॉडेल ।

  अर्थपूर्ण अधिगम के विकास में कक्षा-शिक्षण की प्रक्रिया और तात्पर्य ।
- भिन्न-भिन्न प्रकार की कक्षाओं में शिक्षण : अधिगम के संगठन में प्रतिमान का स्थानांतरण (शिक्षक केन्द्रित से अध्येता केन्द्रित और अधिगम केन्द्रित) विशिष्टताएँ और प्रक्रिया ।

  अधिगम को सुगम बनाने के लिए दल गठन (दक्षतानुसार, विजातीयतानुसार, रुचि तथा पसंद के अनुसार) ।

  अधिगम की ओर उत्प्रेरित करने के लिए शिक्षण, प्रेरणा के प्रकार और शिक्षण की युक्तियाँ ।

- शिक्षण-अधिगम के प्रकार : सम्मुख और दूरस्थ, मौखिक और श्रवण-केन्द्रित तथा डिजिटल, वैयक्तिक तथा दलगत, नियमित कक्षा में अनुदेश का वैयक्तिकीकरण ।

इकाई : 5 : वृत्ति के रूप में शिक्षण : (Teaching as a Profession)

- शिक्षण-वृत्ति का महत्त्व और विशिष्टताएँ, एक सफल शिक्षक की विशिष्टताएँ ।
- शिक्षक को तैयार करना : आवश्यकताएँ, उपादान, विभिन्न स्तरों के विद्यालयों के लिए प्राक् सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम के प्रकार (प्राक् विद्यालयीन, प्रारंभिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक)
- शिक्षक का विकास : आवश्यकता और स्तर विकास में निरंतरता, दृढ़ीकरण, परिपक्वन, सेवारत शिक्षकों के वृत्तिगत विकास में निरंतरता बनाए रखना, आवश्यकताएँ और युक्तियाँ ।
- शिक्षक की वृत्तिगत नैतिकता और उत्तरदायित्व : अर्थ, महत्त्व, आयाम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) 1986-92 की संस्तुतियाँ, शिक्षक के उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करने की युक्तियाँ ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किन्हीं दो पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है :

- किसी विषय पर दो कक्षाओं के कार्यक्रमों पर (अर्थपूर्ण अधिगम के सूचकों के संदर्भ में) निरीक्षण की रिपोट प्रस्तुत करनी है ।
- अर्थपूर्ण अधिगम के विकास के संदर्भ में किन्हीं दो अधिगम सिद्धांतों के शैक्षिक तात्पर्य की तुलना करके संगोष्ठी के लिए एक लेख प्रस्तुत करना है ।
- कम-से-कम दस शिक्षकों के कक्षा-क्रियाकलापों का सर्वेक्षण करके एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- कक्षा में दलगत क्रिया-कलापों का संचालन करना और उस प्रक्रिया पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है । (अध्येताओं की सहभागिता और अधिगम की गुणवत्ता के आधार पर)
- अधिक और कम अनुभववाले शिक्षकों के कक्षा-संचालन का निरीक्षण करके रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।

प्रस्तावित पाठ्य :

१. अधिगम का विकास व शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–रामपाल सिंह और उपाध्याय ।

२. शिक्षण–अधिगम के सिद्धांत–के.के. भाटिया ।

३. शिक्षण एवं अधिगम के मनो-सामाजिक आधार–रामपाल सिंह ।

४. शैक्षिक दृष्टिकोण–पाठक और अग्रवाल ।

५. भाषा शिक्षण सिद्धांत और मनोरमा गुप्त प्रविधियाँ ।

- DeCecco, J.P., & Crawford, W.R. (1974). *Psychology of learning and instruction; Educational psychology.* Englewood Cliffs, N.J.: Prentice Hall.
- Gagne, R.M. (1985). *The conditions of learning and theory of instruction* (4th edition). New York; Holt, Rinehart and Winston.
- Klausmeir, H.J., & Ripple, R.E. (1971). *Learning and human abilities* : Educational Psychology, New York; Harper & Row.
- Lefrancois, Guy R. (1994). *Psychology for teaching.* Belmont, California: Wadsworth Publishing Company.
- Lindgren, H.C. (1980) *Educational Psychology in the classroom.* New York; Oxford University Press.
- Mohapatra, J.K., Mahapatra, M. and Parida, B.K. (2015). *Constructivism: The new paradigm: From theory to practice.* New Delhi: Atlantic Publishers.
- Nolen-Hoeksema, Susan, Fredrickson, Barbara L., Loftus, Geoff R., & Wagenaar, Willem, A. (2014). *Atkinson & Hilgard's introduction to psychology*. Belmont, California: Wadsworth.
- Piaget, J. and Inhelder, B. (1969). *The psychlolgy of the child.* London: Routledge Kegan Paul.
- Sahakian, W.S. (1976). *Introduction to the psychology of learning.* Chicago: Rand McNally College Publishing Company.
- Snowman & Baihler (2006). *Psychology applied to teaching.* Boston: Houghton Mifflin Company.
- von Glasersfeld, F. (1995). *Radical constructivism: A way of knowing and learning.* Washington D.C.: Falmer Press.
- Vygotsky, Lev (1986). Thought and language. Cambridge, M.A: The MIT Press.
- Woolfolk, A.E. (2012). *Educational psychology* (12th Edn.) Englewood Cliffs, N.J.: Prentice Hall.

❑❑❑

PE-4 : शिक्षा में समकालीन विषय

(Contemporary Concerns in Education)

Year-I	Credit-4
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम भी समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ

- भारत में उपलब्ध सामाजिक असमानता, विविधता और उपांतिकता तथा शिक्षा पर उनका तात्पर्य समझ सकेंगे ।
- विद्यालयीन शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिक संवैधानिक व्यवस्था, नीति, संस्तुति और विभिन्न अधिनियमों की व्यवस्था बता सकेंगे ।
- विद्यालयीन शिक्षा के विभिन्न संदर्भों तथा समस्याओं को समझा सकेंगे ।
- विभिन्न संदर्भों तथा समस्याओं को निर्देशित करने में शिक्षकों की भूमिका बता सकेंगे ।
- पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या को कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न संदर्भों तथा समस्याओं को निर्देशित करने के लिए आवश्यक वृत्तिक मूल्यों का विकास कर सकेंगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : समाज में विविधता, असमानता, उपांतिकता

(Diversity, Inequality & Marginalization in Society)

- भाषा, संस्कृति, धर्म, समाज -आर्थिक वर्ग, नैतिक वर्ग में विविधता के संदर्भ में भारतीय समाज ।
- समाज में असमानता के कारण और उनके समाज-सांस्कृतिक तथा शैक्षिक तात्पर्य ।
- शिक्षा के सार्वजनीकरण में बाधाओं के रूप में भेदभाव और कम-महत्व प्रदान ।
- विविधता, असमानता और कम-महत्त्व प्रदान से संबंधित कारणों को जानने में शिक्षा, विद्यालय और शिक्षकों की भूमिका ।

इकाई : 2 : शिक्षा में संवैधानिक व्यवस्था, नीतियाँ और अधिनियम :

(Constitutional Provisions : Policies & Acts in Education)

- शिक्षा में विविधता, असमानता और कम महत्त्व प्रदान करने में उत्पन्न विवादीय विषयों का समाधान करने के लिए संवैधानिक व्यवस्था और मूल्य ।
- इन बाधाओं को दूर करने की नीतियाँ और कार्यक्रम :

  राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 1968 और 1986/92 सर्वशिक्षा अभियान (SSA), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA), ओड़िशा में बहुभाषिक शिक्षा पर राज्य नीतियाँ (2014) ।
- प्रवेश, नामांकन, अवधारण और शिक्षा में गुणात्मक कला के संदर्भ में नीतियों के कार्यान्वयन में समस्याएँ ।

इकाई : 3 : बाल-अधिकार और मानव-अधिकार :

(Child Rights & Human Rights)

- मानव-अधिकार : मानव अधिकारों की संकल्पना और प्रतिज्ञा-पत्र (मानव-अधिकारों की सार्वजनिक घोषणा) मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था ।
- बाल-अधिकार : संकल्पना, और बाल-अधिकार, बाल-अधिकार की सुरक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था, बाल-अधिकार पर राष्ट्रसंघ का सम्मेलन (1989) ।
- शिक्षा में बाल-अधिकार की सुरक्षा के लिए प्रोत्साहन : RCFCE Act - 2009 (शिक्षा अधिकार अधिनियम (RTE Act)) ।

इकाई : 4 : शिक्षा के लिए सार्वभौमिक विषय :

(Global concerns for Education)

- पर्यावरणीय शिक्षा, संदर्भ, संकल्पना, उद्देश्य, क्षेत्र और युक्तियाँ ।
- जीवन कौशल की शिक्षा, संकल्पना और महत्व, केन्द्रीय जीवन-कौशल (विश्व स्वास्थ्य संगठन-(WHO) द्वारा संस्तुत अध्येता के जीवन-कौशल को विकसित करने के लिए विद्यालय, शिक्षकों और समुदाय की भूमिका, राष्ट्रीय कौशल ।

- शिक्षा को गैर सरकारी और सार्वभौम करना : अर्थ, समसामयिक शिक्षा की रूपरेखा पर उनका प्रभाव (पाठ्यचर्या, शिक्षण और प्रबंधन के संदर्भ में) ।
- शांति शिक्षा : संकल्पना, आवश्यकता और युक्तियाँ ।

इकाई : 5 : शिक्षा में गुणात्मक विषय :

(Quality concerns in Education)

- गुणात्मक शिक्षा : संकल्पना, आयाम और सूचक ।
- गुणात्मक शिक्षा के निर्धारक कारक ।
- विद्यालय में गुणात्मक शिक्षा के विकास के लिए प्रोत्साहक तत्त्व : विकेन्द्रीकरण योजना, नवीन सामग्री शिक्षण, और शिक्षकों की दक्षता-वृद्धि, शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में सुधार, समुदाय की संपृक्ति आदि ।
- विद्यालय में गुणात्मक शिक्षा के विकास में विद्यालय, शिक्षकों और समुदाय की भूमिका ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका को किन्हीं दो पर कार्य करना अनिवार्य है :

- असमानता और कम महत्व प्रदान के संदर्भ में एक सामाजिक सर्वेक्षण करना और रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- बाल-अधिकार /मानवाधिकार के उल्लंघन के व्यक्तिवृत्त प्रस्तुत करना है ।
- पर्यावरण की बाधाओं की पहचान के लिए क्षेत्र-अध्ययन और पर्यावरण शिक्षा के लिए योजना बनानी है ।
- समानता की समस्या के संदर्भ में संवैधानिक मूल्यों पर एक मियादी लेख प्रस्तुत करना है ।
- शिक्षा की गुणवत्ता की समस्याओं पर विचार-विमर्श /चर्चा/संगोष्ठी और रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- शांति -शिक्षा और जीवन-कौशल शिक्षा के लिए विद्यालयीन क्रिया-कलाप पर परियोजना प्रस्तुत करनी है ।

प्रस्तावित पाठ्य :

१. शिक्षा के सिद्धांत, विकास एवं समस्याएँ–रीता चौहान ।

२. शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार–पूनम मदान

३. शैक्षिक विचार एवं व्यवहार–गुरुसरण दास/त्यागी ।

४. भारतीय शिक्षा का परिदृश्य–गुरुसरण दास/त्यागी ।

५. भारतीय शिक्षा दर्शन–रामनाथ शर्मा

- Glasser, W. (1990). *The quality school: Managing students without coercion.* New York: Perennia Library.
- Govt. of India (1992). *Report of core group on value orientation to education.* New Delhi: Planning Commission, Govt. of India.
- Kaur, B. (2006). *Teaching peace, conflict and pride.* New Delhi: Penguin Books.
- Kumar, Arvind (2003). *Environmental challenges of the 21st century.* New Delhi: APH Publishing Corporation.
- Kumar, Krishna (1996). *Leaning from conflict.* New Delhi: Orient Longman.
- MHRD (2008). *Framework for implementation of Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan: A scheme for universalisation of access to and improvement of quality at the secondary stage.* New Delhi: Department of School Education and Literacy.
- MHRD (2011). *Sarva Shiksha Abiyan: Framework for implmentation based on the Right of childeren to Free and Compulsory Education Act, 2009.* New Delhi: Department of School Education and Literacy.
- Ministry of Law and Justice (2009). *Right to education.* New Delhi: Govt of India.
- NCERT (2005). *National curriculum framework 2005.* New Delhi: NCERT.
- Panneerselvam, A. & Ramkrishna, M. (1996). *Environmental science education.* New Delhi : Sterling Publishers.
- Puri, M. & Abraham. (Eds.) (2004). *Handbook of inclusive education for educators, administrators and planners.* New Delhi: Sage Publications.

- Sharma, R.A. (1998). *Environmental education.* Meerut : Surya Publication.
- UNESCO (1990). *Source Book on environmental education for secondary teachers.* Bangkok : UNESCO Principal Regional Office for Asia Pacific.
- UNESCO (1994). *Source Book on environmental education for elementary teacher educators. Ban kok : UNESCO Principal Regional Office for Asia Pacific.*
- UNESCO (1997). *Trends in environmental education.* Paris : UNSECO
- UNESCO (1998). *Education for a sustainable future : A transdisciplinary vision for concerted action.* Paris: UNESCO.
- UNESCO (2001). *Learning the way to peace: A teacher's guide to peace education.* Paris: UNESCO.
- UNESCO (2004). *Education for all: The quality imperative.* EFA Global Monitoring Report. Paris: UNESCO.
- UNESCO (2012). *Shaping the education of tomorrow: 2012 Report on the UN decade of education for sustainable development.* Paris: UNESCO.
- Unicef (2000). *Defining quality in education.* New York: Programme Division (Education), Unicef.
- WHO (1997). *Comprehensive school health programme.* New Delhi: World Health Organization Regional Office.
- WHO (1997). *Life skills education for children and adolescents in schools; Introduction and guidelines to facilitate the development and implementation of life skills programmes.* Geneva: Division of Mental Health and Prevention of Substance Abuse, World Health Organization.
- WHO (1999). *Partners in Life Skills Training: Conclusions from a United Nations Inter-Agency Meeting.* Geneva: World Health Organization.
- WHO (2004). *Skills for health: An imporant entry-point for health promoting / child -friendly schools.* Geneva: World Health Organization.

❑❑❑

PE-5 : ज्ञान और पाठ्यचर्या

(Knowledge and Curriculum)

Year-I	Credit-4
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाएँ

- ज्ञान के स्वरूप को समझा सकेंगे ।
- ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया को वर्णन कर पाएँगे ।
- पाठ्यचर्या के प्रकारों के अंतर को बता पाएँगे ।
- पाठ्यचर्या की योजना के विकास की प्रक्रिया और सिद्धांतों को समझा पाएँगे ।
- पाठ्यचर्या के संपादन, मूल्यांकन और पुनः नवीकरण प्रक्रिया को विस्तृत रूप से समझा पाएँगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : ज्ञान का स्वरूप : (Understanding the Nature of Knowledge)

- ज्ञान : संकल्पना (ज्ञान तथा दक्षता में अंतर, ज्ञान तथा सूचना, शिक्षण तथा प्रशिक्षण के कारण तथा विश्वास में अंतर) और स्वरूप ।
- ज्ञान के प्रकार और सिद्धांत ।
- ज्ञानार्जन : ज्ञान के स्त्रोत और ज्ञानार्जन की प्रक्रियाएँ ।

इकाई : 2 : ज्ञान का निर्माण (Construction of Knowledge)

- ज्ञान संरचना (शिक्षक-केन्द्रित) बनाम ज्ञान निर्माण (अध्येता-केन्द्रित) ।
- ज्ञान की प्रक्रिया : डीवी, आसुवेल और ब्रूनर के आविष्कार, क्रियाकलाप तथा विचार ।
- ज्ञान का निर्माण : पियाजे और वाइगोत्सकी के सिद्धांत, पाठ्यचर्या में इसका तात्पर्य ।

इकाई : 3 : पाठ्यचर्या को समझना : (Understanding Curriculum)

- संकल्पना (पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या में अंतर), प्रकार (विषय-केन्द्रित, शिक्षक-केन्द्रित, अध्येता-केन्द्रित, अधिगम-केन्द्रित, अनुभव-केन्द्रित, क्रिया-कलाप केन्द्रित, अप्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष) और उपादान ।
- पाठ्यचर्या के नीति निर्धारण के लिए अध्यादेश–संवैधानिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, अर्थनीतिक, विश्वसंबंधित, पर्यावरणीय आदि ।
- पाठ्यचर्या की रूपरेखा : संकल्पना, सिद्धांत और क्षेत्र; NCF-2005, SCF-2009 और NCFTE-2009 उद्देश्य, पक्ष और सिफारिशें ।

इकाई : 4 : पाठ्यचर्या की योजना और विकास : (Curriculum Planning and Development)

- पाठ्यचर्या विकास के साधन ।
- पाठ्यचर्या विकास के सिद्धांत ।
- पाठ्यचर्या की योजना और विभिन्न दृष्टिकोण
- पाठ्यचर्या के विकास की प्रक्रिया तथा स्तर (प्रस्तुति, प्रयास तथा परिसमाप्ति)

इकाई : 5 : पाठ्यचर्या संपादन, मूल्यांकन एवं नवीकरण :
(Curriculum Transaction, Evaluation and Renewal)

- संपादन : योजना (समय, स्थान, जनशक्ति, सामग्री और पाठ की रूपरेखा)

  (पाठ्य सहगामी सामग्री और क्रियाओं की प्रस्तुति, पाठ्यपुस्तक और सहायक सामग्री, अधिगम क्रियाकलाप)

  कक्षा संचालन का संपादन, पाठ्य -योजना की तैयारी ।

  संपादन के प्रकार, अध्येताओं की संपृक्ति, अधिगम उपकरणों का प्रयोग, अधिगम के लिए मूल्य निर्धारण की क्रियाविधि ।

- मूल्यांकन : क्रियाविधि (आन्तरिक तथा बाह्य) अवधिगत (सतत, कलांशगत) क्रिया (अनुसंधानात्मक अध्ययन, ऑन -साइट (प्रत्यक्ष) निरीक्षण FGD, अन-लाइन फिड-बैक ।
- नवीकरण : मूल्यांकन फिड-बैक इन-पुट का प्रयोग, तात्कालिक तथा दीर्घकालिक पुनरावृत्ति के लिए, (विशिष्ट / व्यापक उन्नति के लिए)।
- कार्यकारिता, विद्यालयीन शिक्षा और शिक्षक-शिक्षा में राज्य के पाठ्यचर्या विकास के लिए सांप्रतिक प्रावधान मूल्यांकन, संचालन और नवीकरण ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किन्हीं दो विषयों पर कार्य करना अनिवार्य है :

- माध्यमिक विद्यालय के किसी एक विषय पर पाठ संपादन की रूपरेखा प्रस्तुत करनी है ।
- राष्ट्रीय शिक्षानीति (NPE)-1986 के परवर्ती संस्करण में लागू किए गए पाठ्यक्रम नवीकरण प्रक्रिया पर एक समीक्षात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- NCF -2005 में उपलब्ध व्यापक सुधार में से किसी एक पहलू पर एक समीक्षात्मक लेख प्रस्तुत करना है, (जिसका प्रभाव वर्तमान शैक्षिक-व्यवस्था पर पड़ रहा हो) ।
- अधिगम संसाधन की पहचान और पाठ-दान के लिए कक्षा के बाहर के क्रियाकलापों पर प्रारूप प्रस्तुत करना है ।

प्रस्तावित पाठ्य :

१. शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार–एस.पी.कुलश्रेष्ठ

२. पाठ्यक्रम व विद्यालय व्यवस्था–एस.पी.सुखिया

३. पाठ्यक्रम विकास–सियाराम यादव

४. शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार–महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

५. मूल्य शिक्षण–रामशकल पांडेय

- Chakravarti, Uma. (2003). *Gendering cast through a feminist lens.* Calcutta, Bhatkal and Sen.
- Govt. of India (1992). *National Policy on education 1986/92.* New Delhi : MHRD, Govt. of India.
- Govt. of India (1992). *Programme of action.* New Delhi : MHRD, Govt. of India.
- Jone, Mary E.(Ed.) (2008). *Women's studies in India : A reader,* New Delhi : Penguin Books.
- Nayar, U. & Duggal, J. (1997). *Women's equlity and empowerment through curriculum : A hand book for teachers at primary stage.* New Delhi : NCERT.
- NCERT (2005). *National curriculum framework 2005*. New Delhi : NCERT.
- Srivastava, Gouri (1997). *Women who created history : Exempler matarials for textbook writes and teachers.* New Delhi : NCERT.
- Agarwal Y. P. (1990) स्टाटिस्टिकाल मेथड्स : कनसेप्ट, एप्लिकेशन्स एण्ड कम्पूटासन्स, न्यू दिल्ली : स्टेरलिंग पब्लिशर्स ।
- Burke K. (2005) हाव टू एसेस अथेंटिक लर्निंग (4th Ed.) थाउजेण्ड ओक्स, सीए : कोरविन ।
- Danielson, C., (2002) एनहानसिंग स्टूडेण्ट एचिवमेंट : ए फ्रेमवर्क फॉर स्कूल इम्प्रुवमेंट एलक्सजेण्ड्रिआ, विए : एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एण्ड करिकुलम हेवलपमेंट
- Garrett H.E. (1973) स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलजी एण्ड एजुकेशन् (6th Ed.) मुम्बई : वाक्लिस, फिफेर्स एण्ड साइमन
- Gronlund N.E. & Linn R.L. (2009) मेजरमेंट एण्ड एसेसमेंट इन टिचिंग (10th Ed.) अपर साडल रिवर.एन.ज. : पियरसन एजुकेशन, Inc.
- Newman F.M. (1996) अथेंटिक एजिवमेंट : रिस्ट्रक्यरिंग स्कूल्स फॉ इन्टेलेक्चुअल क्वालिटी, सान फ्रानसिस्को, CA : जोसी-बास
- Nitko A.J. (2001) एजुकेशनल एसेसमेंट ऑफ स्टूडेंट्स (3rd Ed.) अपर सडली रिवर NJ : प्रिनटाइस हल :
- Pophom W.J. (1993) एजुकेशनल इवाल्यूएसन मेंजरमेंट, इंगलिवुड क्लिफ्स N.J. : प्रिनटाइस हल ।
- Popham W.J. (2010) क्लास रूम एसेसमेंट : ह्वाट टिचर्स निड नो (6th Ed.) न्यू योर्क : प्रिनटाइस हल-

❑❑❑

PE-6 : शैक्षिक प्रबंधन

(Educational Management)

Year-I	Credit-4
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाएँ

- राष्ट्रीय स्तर से संस्थाओं के स्तर तक शैक्षिक प्रबंधन की संरचना प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकेंगे ।
- शैक्षिक प्रबंधन की प्रस्तुति के लिए विभिन्न नीतियों तथा व्यवस्थाओं को समझा सकेंगे ।
- प्रभावी विद्यालय संचालन के लिए विभिन्न संसाधनों को पहचान सकेंगे तथा प्रयोग कर सकेंगे ।
- विद्यालय विकास की योजनाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सकेंगे ।
- प्रभावी विद्यालय-प्रबंधन के लिए मॉनीटरिंग एवं पुनर्निवेश की भूमिका और कार्यविधि को समझ सकेंगे ।

पाठ्य विषय वस्तु :

इकाई : 1 : शैक्षिक प्रबंधन (Educational Management)

- संकल्पना, कार्यक्षेत्र, प्रकार, केन्द्रीकरण तथा विकेन्द्रीकरण, गणतांत्रिक एवं प्राधिकारिक, प्रतिभागी-युक्त एवं प्रतिभागी–मुक्त ।
- राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर, जिला स्तर, उप-जिला स्तर एवं संस्थागत स्तरों में शैक्षिक प्रबंधन की संरचना और भूमिका ।

इकाई : 2 : विद्यालय आधारित प्रबंधन (School Based Management)

- संकल्पना, अर्थ, महत्व, कार्यक्षेत्र एवं प्रक्रिया ।
- विद्यालय प्रबंधन समिति और विद्यालय प्रबंधन विकास समिति ।
- विद्यालय प्रबंधन पर राज्य नीतियाँ RCFCE अधिनियम-2009 और राज्य अधिनियम -2010.

इकाई : 3 : संसाधन प्रबंधन : स्त्रोत, उपयोग एवं संग्रह (Resource Management : Sources, Ultilization and Mobilization)

- आधारभूत संसाधन : विद्यालय भवन, मुक्त परिसर, फर्नीचर, जल व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधाएँ एवं स्वस्थ वातावरण ।
- सामग्री संसाधन : उपकरण एवं शैक्षणिक सामग्री ।
- अर्थ संसाधन : अनुदान, संदान, शुल्क और निधि उत्पादन, अन्य स्त्रोत ।
- मानव संसाधन : अध्येता, शिक्षक, अभिभावक, समुदाय, स्थानीय विद्वान और उनके अंतः-संबंध ।
- संसाधन संग्रह में विद्यालय एवं समुदाय की भूमिका : स्थानीय संसाधन तथा अन्यान्य संसाधन संग्रह में सामूहिक तथा गैर-सरकारी, सामाजिक संगठनों का उत्तरदायित्व, विद्यालय में संसाधनों का प्रबंधन ।

इकाई : 4 : विद्यालय विकास योजना :
School Development Plan (SDP)

- अर्थ, महत्व एवं प्रक्रिया ।
- विद्यालय विकास की योजना में राज्य सरकार की नीतियाँ ।
- विद्यालय विकास की योजना की प्रस्तुति में कर्मकर्ताओं की भूमिका ।
- विद्यालय विकास योजना (SDP) के कार्यान्वयन में राज्य की समस्याओं का पता लगाना ।

इकाई : 5 : पुनरावलोकन, मॉनीटरिंग एवं प्रक्रिया के पुनर्निवेश की कार्यविधि । (Review, Monitoring and Feed back Mechanisms)

- मॉनीटरिंग–अर्थ, महत्व, क्षेत्र, उद्देश्य ।
- मॉनीटरिंग की कार्यविधि–संरचना, कार्मिक तथा कार्य, उपलब्ध मॉनिटरिंग व्यवस्था, प्रासंगिक समस्याएँ ।
- कार्यविधि का पुनर्निवेश : संरचित बनाम असंरचित, प्रभावी विद्यालयीन कार्य में पुनर्निवेश की आवश्यकता ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किन्हीं दो पर कार्य करना अनिवार्य है–

- विद्यालय के विकास में विद्यालय समुदाय की सहभागिता पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- SMC / SMDC की बैठकों का निरीक्षण करते हुए एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।

- विद्यालय में उपलब्ध विभिन्न संसाधनों के प्रयोग के सर्वेक्षण पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- विद्यालय विकास योजना की समीक्षा पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- राज्य के माध्यमिक स्तर पर उपलब्ध मॉनीटरिंग की कार्यविधि का मूल्य निर्धारण करके विद्यालय के विकास के लिए सुझाव पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।

प्रस्तवित पाठ्य :

१. संसाधन प्रबंधन–वीणा भास्कर

२. विद्यालय प्रबंधन और शैक्षिक नवाचार–एल. चौधरी

३. स्कूल प्रबंध व शैक्षिक क्रियात्मक अनुसंधान–पी.डी.पाठक

४. विद्यालय प्रबंदन और नियोजन–के.पी.माथुर

५. शैक्षिक प्रबंध के मूल तत्व–देवदत्त शर्मा

- Buch, T.et al. (1980). *Approaches to school management.* London: Harper and Row.
- Chalam K.S. (2003): Introduction to Educational Planning and Management: New Delhi, Anmol Publication Pvt. Ltd.
- Chandrasekharan P. (1997): New Delhi, Educational Planning and Management, Sterling Publishers Pvt. Ltd.
- Glasser, William (1990). *The quality school.* New York, NY : Harper Collins Publishers, Inc.
- Government of India (1986/92). *National policy on education.* New Delhi; MHRD
- Gupta, S.K. & Gupat, S.91991). *Educational administation and management.* Indore: Manorama Prakashan.
- Hallak, J. (1990). *Investing in the futrure :Setting educational priorities in the developing world.* Paris: UNESCO.
- Kalra, Alka (1977). *Efficient school management and role of principals :* New Delhi: APH Publishing Corporation.
- Lockheed, M.E. & Verspoor, A.M. et al. (1991). *Improving primary education in developing countries: A review of policy options.* New York: Oxford University Press.
- Shaeffer, S. (1991). *Collaborating for educational change; the role of parents and the community in school improvement.* Paris: UNESCO.
- Tyagi R.S. and Mahapatra P.C. (2000), Educational Administration in Orissa : New Delhi, National Institute of Educational Planning and Administration (NIEPA)
- Vashist, Savita(ed.) (1998). *Encyclopaedia of school education and management.* New Delhi: Kamal Publishing House.

❑❑❑

PE-7 (a) : एक संलग्नक विद्यालय का निर्माण

(Creating an Inclusive School)

Year-2	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ

- संलग्नक शिक्षा संबंधीय परिवर्तित संकल्पनाओं का वर्णन कर पाएँगे ।
- विद्यालय में विशिष्ट वर्गों के बालकों की विशेष आवश्यकताओं, शैक्षिक समस्याओं और समाधान के लिए संलग्नक शिक्षा की जरूरत को बता पाएँगे ।
- वर्तमान के विद्यालयों में संलग्नक शिक्षा की बाधाओं के बारे में बता पाएँगे ।
- एक विद्यालय की विशेषताओं और आयामों पर प्रकाश डाल पाएँगे ।
- एक संलग्नक विद्यालय के विकास की प्रक्रियाएँ वर्णन कर पाएँगे ।

पाठ्य विषय-वस्तु :

इकाई : 1 : संलग्नक शिक्षा : (Inclusive Education)

- संलग्नक के परिवर्तित विचार (विभाजन से एकीकरण तथा संलग्नक तक स्थानान्तरण) सभी के लिए संलग्नक शिक्षा ।
- शिक्षा में संलग्नता : मानवाधिकार (प्रवेश का अधिकार, समान का अधिकार एवं गुणात्मक शिक्षा का अधिकार)
- संलग्नक शिक्षा : अर्थ तथा परिभाषा, आधार, विशेषताएँ और सिद्धान्त ।

इकाई : 2 : विशिष्ट बालकों की आवश्यकताएँ :
(Children with Special Needs)

- हाशिए में रहने वालों के प्रकार, भिन्नक्षम बालकों के प्रकार (शारीरिक, सामाजिक और सांवेगिक) और उनकी आवश्यकताएँ ।
- विशिष्ट बालकों की शैक्षिक समस्याएँ : शारीरिक, संज्ञानात्मक और सांवेगिक ।
- संलग्नक शिक्षा में विशिष्ट बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए युक्तियाँ, कक्षा प्रबंधन में उनकी आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान, बैठने की व्यवस्था, सहायक सामग्री, प्रकाश और मुक्त हवा की व्यवस्था, शैक्षिक उपकरणों का प्रयोग (TLM) कक्षा में गतिशीलता, अन्तर वैयक्तिक संबंध और समर्थन, लचीला पाठ्यचर्या, लचीली शिक्षण-अधिगम युक्तियाँ, बाल-केन्द्रित पारस्परिक क्रिया, व्यक्तिगत, दलगत, सहयोगिता और कक्षा संचालन में सहभागिता ।

इकाई : 3 : संलग्नक विद्यालय (Inclusive School)

- विद्यालय में संलग्नक शिक्षा की बाधाएँ : मनो-सामाजिक, आधारिक संरचना संपूर्ण कक्षा आधारित निर्देश, संसाधन, प्रतिभागिता में कमी ।
- संलग्नक विद्यालय की संकल्पना, आयाम और लक्षण ।
- संलग्नक विद्यालय का विकास : संलग्नक संस्कृति का निर्माण (समुदायों का निर्माण, संलग्नक मूल्यों की स्थापना) संलग्नक नीतियों का विकास (सभी के लिए विद्यालय का विकास, विभेदता के लिए सहायता का संगठन) संलग्नक अभ्यास का विकास (ऑरकेस्ट्रा अधिगम, संसाधन संग्रह) ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किसी एक विषय पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है ।

- एक संलग्नक विद्यालय की कक्षा व्यवस्था का निरीक्षण तथा एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- किसी विशिष्ट वर्ग के विद्यार्थियों की कक्षा-गत समस्याओं और समाधान के लिए शिक्षक की भूमिका पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- विद्यालय में किसी विशिष्ट वर्ग के विद्यार्थियों के लिए किए जानेवाले विविध हस्तक्षेपों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।

प्रस्तवित पाठ्य :

१. सलग्नक शिक्षा–ए.एस. ठाकुर

२. कार्य शिक्षा–के.पी. पटनायक

३. विशिष्ट बालक–आभारानी बिष्ट

४. विशिष्ट शिक्षा–माधुरी हूडा

- Ainscow, M. (1999) *Understanding the development of inclusive schools,* London: Falmer
- Ainscow, M., Dyson, A. And Weiner, S. (2013). *From exclusin to inclusion: Ways of responding in schools to students with special eudcational needs.* Berkshire, London: CIBT Education Trust
- Booth, Tony and Ainscow, Mel (2002), *Index for inclusion: Developing learning and participation in schools.* London: Centre for Studies on Inclusive Education.
- Dyson, A. and Millward, A. (2000). *Schools and speical needs: issues of innovation and inclusion.* London: Paul Chapman.
- Hart, S., Dixon, A., Drummond, M.J. and McIntyre, D. (2004). *Learning without limits,* Maidenhead: Open University Press.
- Nind, M., Sheehy, K. and Simmons, K. (eds). *Inclusive education: learners and learning contexts.* London: Fulton
- Thomas, G., & Loxley, A. (2007). *Deconstruction Special Education and Constructing Inclusive* (2nd Edn.) Maidenheas: Open University Press.
- Tomasevski, K. (2004) Manuals on right based education, Bangkok : Unesco.
- UNESCO (1985). *Helping handicapped pupils in ordinary schools; Strategies for teacher training.* Paris: UNESCO.
- UNESCO (1990). *World declaration on education for all framework for action to meet basic laerning needs.* International Consultative Forum on Education for All Paris ; UNESCO
- UNESCO (1994). *The Salamanca World conference on speicial needs education: Access and quality.* UNESCO and the Ministry of Education, Spain. Paris: UNESCO
- UNESCO (1996). *Learning : the treasure within. raport to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century.* Paris: UNESCO
- UNESCO (1998). *Wasted opportunities: When schools fail. Education for all. Status and trends.* Paris: UNESCO.
- UNESCO (1999). *From special needs education to education for all : A discussion document.* Tenth Steering Committee Meeting UNESCO, Paris 30 September-1 October 1998.
- UNESCO (1999) *Welcoming Schools: Students with disabilities in regular schools.* Paris: UNESCO.
- UNESCO (2005). *Guidelines for inclusion: Ensuring access to education for all.* Paris: UNESCO.
- United Nations (1989). *Convention of the rights of the child.* New York: United Nations.

❑❑❑

PE-7 (b) : लिंग भेद, विद्यालय और समाज

(Gender, School and Society)

Year-2	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ

- लिंग गत समस्या संबंधी संकल्पनाओं को जान पाएँगे ।
- विद्यालयी शिक्षा, पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तक और शैक्षणिक प्रक्रिया में प्रमुख लिंगगत समस्याओं को पहचान पाएँगे ।
- विद्यालय के संदर्भ में अन्दर तथा बाहर लिंग संबंधी समस्याओं समाधान के उपाय समझ सकेंगे ।

पाठ्य विषय-वस्तु :

इकाई : 1 : लिंग संबंधी विचार : (Gender related concepts)

- मुख्य विचार : लैंगिक विचार, पुरुषत्ववाद बनाम नारीवाद, पितृसत्ता, लिंग भेद, समानता और असमानता ।
- लिंग पहचान का सिद्धान्त : घर, समाज और संस्कृति का प्रभाव ।

इकाई : 2 : लिंग संबंधी असमानता और समस्याओं का रूप :

(Forms of Gender Inequality and Issues)

- स्वरूप और समस्याएँ : मृत्युसंख्या में असमानता, जन्मदर में असमानता, विशेष सुविधा प्रदान में असमानता, वृत्तीय असमानता, मूल सुविधा प्रदान में असमानता, स्वाधिकार में असमानता, परिवार में असमानता ।
- विद्यालय में लिंगगत असमानता : प्रवेश और सहभागिता, लिंग संबंधी रूढ़ अवधारणा : पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक, लिंगगत संवेदनशील सुविधाओं में अपर्याप्तता, शिक्षकों का पक्षपातपूर्ण विचार, विद्यालय में यौन-संबंधी दुर्व्यवहार ।

इकाई : 3 : लिंग संबंधी समस्याओं का समाधान : हस्तक्षेप और युक्तियाँ

(Addressing Gender Issues : Interventions and Strategies)

- लिंग संबंधी समस्याओं के समाधान में परिवार, विद्यालय, समुदाय तथा मिडिया की भूमिका ।
- नीति प्रावधान– NPE (1986/92), NCF (2005), RTE (2009) राज्य महिला नीति (2014) ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किसी एक विषय पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है ।

- पाँच परिवारों के विभिन्न सदस्यों में कार्य वितरण पर सर्वेक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- विद्यालय के कर्मचारीवृन्द एवं विद्यार्थियों की भूमिका और कार्यों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- लिंग परिप्रेक्ष में माध्यमिक स्तर की किसी पाठ्य पुस्तक की समीक्षा पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।

प्रस्तावित पाठ्य :

Chakravarti, Uma. (2003). *Gendering cast through a feminist lens.* Calcutta, Bhatkal and Sen.

Govt. of India (1992). *National policy on education 1986/92.* New Delhi: MHRD, Govt. of India.

Govt. of India (1992). *Programme of action.* New Delhi: MHRD, Govt. of India.

Jone, Mary E.(Ed.) (2008). *Women's studies in India: A reader,* New Delhi : Penguin Books.

Nayar, U. & Duggal, J. (1997). *Women's equality and empowerment through curriculum: A hand book for teachers at primary stage.* New Delhi: NCERT

NCERT (2005). *National curriculum framework 2005.* New Delhi: NCERT.

Srivastava, Gouri (1997), *Women who created history: Exemplar materials for textbook writes and teachers.* New Delhi: NCERT.

❑❑❑

PE-8 (a) : क्रियात्मक अनुसंधान और नवीकरण
(Action Research and Innovation)

Year-2	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

पूर्णांक-50

उद्देश्य :

इस पाठक्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- क्रियात्मक अनुसंधान की संकल्पना, आवश्यकता, महत्व तथा शिक्षा में शुद्ध और अनुप्रयुक्त अनुसंधान से इसका अन्तर पहचान सकेंगे ।
- उपयुक्त विधियों का चयन तथा प्रयोग करके क्रियात्मक अनुसंधान संचालन कर सकेंगे ।
- क्रियात्मक अनुसंधान के समय का कर सकेंगे ।
- किसी क्रियात्मक अनुसंधान योजना के उद्देश्य, प्रक्रियाओं और कार्यान्वयन के अनुसार मूल्यायन कर सकेंगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : क्रियात्मक अनुसंधान

- शैक्षिक कार्यों के विकास में अनुसंधान की आवश्यकता ।
- क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ महत्व, विशेषताएँ और उद्देश्य ।
- शुद्ध और अनुप्रयुक्त और क्रियात्मक अनुसंधान की तुलना ।

इकाई : 2 : क्रियात्मक अनुसंधान का संचालन

- क्रियात्मक अनुसंधान योजना का रूपांकन ।
- क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली और सोपान ।
- क्रियात्मक अनुसंधान के संचालन में प्रयुक्त विधियाँ और उपकरण ।

इकाई : 3 : क्रियात्मक अनुसंधान पर रिपोर्टिंग

- प्रारूप और शैली ।
- क्रियात्मक अनुसंधान की परियोजना का मूल्यायन ।
- अनुसंधान की प्रक्रिया में शामिल होना, चिन्तन करना और परिणाम पर कार्यान्वयन करना ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किसी विद्यालय/कक्षा की समस्याओं पर क्रियात्मक अनुसंधान का संचालन करके रिपोर्ट प्रस्तुत करना अनिवार्य है ।

१. शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान–रामशकल पांडेय, अमिता

२. शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध और नवाचार–महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

३. शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबंध–रामशकल पांडेय

Atkins. L & Wallace, S. (2012). *Qualitative research in education.* London: Sage Publications.

Best, J.W., & Kahn, J.V. (1998). *Research in education* (8h ed.). Needham Heights, MA : Allyn and Bacon.

Borg. W. (1981). *Applying educational research: A practical guide for teachers.* New York: Longman.

Ferrance, Eileen (2000), *Action research.* Providence, RI: Laboratory at Brown University (LAB).

Johnson, A.P. (2005). *A short guide to action research (2nd ed.).* Boston: Allyn & Bacon.

Mertler, C.A. (2006). *Action research: Teachers as researchers in the classroom.* New Delhi: Sage Publications.

Oja, S.N., & Smulyan. L. (1989), *Collaborative action research: A development approach,* New York: Falmer Press.

Schmuck, R.A. (1997), *Practical action research for change.* Arlington Heights, Illinois: SkyLight Professional Development.

Stringer, E.T. (1999). *Action research.* Thousand Oaks, CA: Sage Publications.

❑❑❑

PE-8 (b) : निर्देशन और परामर्श :

(Guidance & Counselling)

Year-2	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

पूर्णांक-50

उद्देश्य :

इस पाठक्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- निर्देशन की संकल्पना, सिद्धान्त और आवश्यकताओं को बता सकेंगे ।
- विभिन्न निर्देशन कार्यक्रमों को संगठित करने में विद्यालय की भूमिका जान सकेंगे ।
- उपयुक्त संदर्भ में निर्देशन के विभिन्न सोपानों और तकनीकों का प्रयोग कर सकेंगे ।
- परामर्श की प्रक्रियाओं, तकनीकों और साधनों का वर्णन कर सकेंगे ।
- विद्यालय परामर्शदाता की भूमिका और गुणों का वर्णन कर सकेंगे ।

पाठ्य विषय वस्तु :

इकाई : 1 : विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम ।

- निर्देशन की संकल्पना, महत्व, सिद्धान्त और आवश्कयताएँ ।
- निर्देशन के प्रकार : शैक्षिक, व्यावसायिक और वैयक्तिक (प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर पर)
- विद्यालय में निर्देशन –सेवा : परामर्श, व्यावसायिक, सूचना-सेवा, स्थानन, अध्येता की सेवा-सूची ।
- विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रमों का संगठन ।
- विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रमों की समस्याओं को जानना ।

इकाई : 2 : विद्यायल परामर्श कार्यक्रम :

- परामर्श का अर्थ, उद्देश्य और सिद्धान्त ।
- परामर्श के प्रकार : प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष और मिश्रित ।
- परामर्श की अन्तर्निहित प्रक्रियाएँ ।
- विद्यालय में परामर्शदाता की भूमिका और गुण ।

इकाई : 3 : निर्देशन और परामर्श के उपकरण और तकनीकें ।

- वैयक्तिक और सामूहिक रूप से निर्देशन और परामर्श ।
- निर्देशन और परामर्श के उपकरण : शून्यस्थान, संचयमान रिकार्ड कार्ड, स्केल रेटिंग रूकेल, प्रश्नावली, मनोवैज्ञानिक परीक्षण और विस्तृत सूची ।
- निर्देशन की तकनीकें : (निरीक्षण, साक्षात्कार और अंतः वैयक्तिक संबंधों का अध्ययन) परामर्श तकनीकें (व्याख्यान, आलोचना, नाटकीयता) सामूहिक निर्देशन संकल्पना तथा तकनीक ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किसी एक सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है –

- किसी विद्यालय के लिए सर्वेक्षण की आवश्यकता पर एक विस्तृत निर्देशन कार्यक्रम पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- दसवीं कक्षा के अध्यताओं के लिए एक व्यावसायिक / शैक्षिक परामर्श कार्यक्रम पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- माध्यमिक विद्यालय के अध्येताओं के लिए कैरियर परामर्श प्रदान हेतु एक सामाजिक-अर्थनैतिक सर्वेक्षण पर प्रश्नावली प्रस्तुत करनी है ।

प्रस्तवित पाठ्य :

१. निदेशन एवं परामर्श–शशी चितौड़ा

२. परामर्श और उद्बोधन–विपिन अस्थाना

३. शिक्षा में निर्देशन और परमार्श-सीताराम जायसबाल

४. शिक्षा में निर्देशन और परामर्श की भूमिका–राधाबल्लभ सीताराम

- Bhatnagar, Asha and Gupta, Nirmala (Eds) (1999). *Guidance and counseling: A theoretical prspective* (Vol. I). New Delhi: Vikas.
- Bhatnagar, Asha and Gupta, Nirmala (Eds) (1999). *Guidance and counseling: A priactical approach* (Vol. II). New Delhi: Vikas.
- Dave, Indu (1984). *The basic essentials of counseling.* New Delhi: Sterling Pvt. Ltd.
- Gazda George R.M. (1989). *Group counseling: A development approach.* London: Allyn and Bacon.
- Gibson, R.L. & Mitchell, M.H. (1986). *Introduction to guidance.* New York: McMillan.
- Nugent, Frank A. (1990), *An Introduction to the profession of counseling.* Columbus: Merrill Pulishing Co.
- Pietrofesa, J.J., Bernstein, B., and Standford, S. (1980). *Guidance: An introduction.* Chicago: Rand McNally.
- Rao, S.N. (1981). *Counseling psychology.* New Delhi: Tata McGraw Hill.
- Saraswat, R.K. & Gaur, J.S. (1994). Manual for guidance counselors. New Delhi: NCERT.

❑❑❑

(ग) : क्षेत्रीय कार्य में संपृक्ति

1. दत्तकार्य (प्रत्येक पाठ्यक्रम में सूचित)
2. वृत्तिगत क्षमता के विकास पर पाठ्यक्रम
3. विद्यालय–प्रशिक्षण
4. समुदाय में क्रिया कलाप

C. ENGAGEMENT WITH THE FIELD

1. Tasks and Assignments (Indirected under each course)
2. Courses on Enhancing Professional Capacities (EPC)
3. School Internship (SI)
4. Community Activities (CA)

आई.सी.टी. समीक्षा

EPC- 1 : (Critical Understanding of ICT)

Year-1	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- कंप्यूटर सिस्टम का वर्णन कर पाएँगे ।
- कंप्यूटर के कार्य को समझ पाएँगे ।
- विण्डोज अपरेटिंग सिस्टम को चालित कर पाऐंगे ।
- शिक्षा में वार्ड प्रोसेसिंग पैकेज का प्रयोग कर पाएँगे ।
- शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इंटरनेट व्यवहार कर पाएँगे ।
- शिक्षण और अधिगम में ICT का प्रयोग सीख पाएँगे ।
- कंप्यूटर की समस्याओं की पहचान कर समाधान के उपाय ढूँढ़ पाएँगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : कंप्यूटर परिचय : (Computer Fundamentals)

- कंप्यूटर का स्वरूप : कंप्यूटर के अंग, इनपुट, डिवाइस–की-बोर्ड, माउस, टच स्क्रीन, एम.आई.सी. आर. (MICR) लाइट पेन, जय स्टीक, डिजिटाइजर, स्कैनर, आउटपुट डिवाइस (VDU), प्रींटर, लेजर, इंकजेट, डेटा स्टोरेज डिवाइस, हार्डडिस्क, कंपाक्ट डिस्क, अपटिकल डिस्क, पेनड्राइव और अन्य डिवाइस ।
- अपरेटिंग सिस्टम : प्रकार डस यूनिक्स ।
- विण्डोज संक्षिप्त परिचय, सॉफ्टवेयार की उपयोगिता और प्रयोग ।
- नेटवार्किंग का परिचय : प्रकार LAN, WAN, www वेवसाइट ।

इकाई : 2 : कंप्यूटर का प्रकार्य :

(Introduction to Computer Applications)

- शब्द प्रक्रिया : डॉक्यूमेंट बनाना, फॉरमेंटिग करना, सेव और प्रुफ करना, प्रिटिंग डाक्यूमेंटस, (MS Word) का प्रयोग ।
- पावार पॉइंट प्रस्तुति (PPT): एक नूतन पीपीटी बनाना, उपस्थापन को मिलाना, टेक्सर कॉलर, फिल कॉलर, फिल इफैक्टस, लाइन इफैक्टस, लाइन स्टाइल, अबजेक्ट इफैक्स, शब्द कला, एनिमेसन इफैक्टस, इफैक्टस का प्रयोग । ऑन स्क्रीन, उपस्थापन, उपस्थापना का समय , उपस्थापन का पजिंग, शिक्षा में पीपीटी का प्रयोग ।
- स्प्रेड सीट-एमएस, एक्सल, वर्क सीट खोलना और सेव करना, स्प्रेड कटि अपरेसन, स्प्रेड सीट का एडिट करना, फॉमूला और प्रक्रिया का प्रयोग, शिक्षा में एम एस एक्सेल का प्रयोग ।

इकाई : 3 : शिक्षा में ICT (ICT in Education)

- संकल्पना, आवश्यकता और महत्व ।
- शिक्षा में मल्टिमेडिया एप्रोच, वीडीओ कनफरासिंग की भूमिका, रेडिओ कंनफेर्सिंग, दूरदर्शन, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया EDUSAT और इंटरनेट उनकी सीमाएँ और उपयोगिताएँ ।

- भारतीय विद्यालय कक्षाओं में ICT के लिए चुनौतियाँ और बाधाएँ ।
- ICT प्रवीण शिक्षक- ICT शिक्षक के गुण और प्रवीण ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किसी एक विषय पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है ।

- किसी स्कूल के विषय पर श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम के लिए एक लेख प्रस्तुत करना है ।
- माध्यमिक स्तर पर संव्यवहार करने के लिए किसी एक विषय पर पावार पॉइंट प्रस्तुत करना है ।
- AVRC / EMRC द्वारा प्रसारित किन्हीं पाँच UGC प्रायोजित शैक्षिक कार्यक्रम पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।

Suggested Readings :

Gorden B. Davis (1982). *Introduction to computers.* New Delhi: Tata McGraw-Hill

Harold F.O' Neli. (1981). *Computer-based instruction.* Academic Press.

Kraynak, Joe & Harbraken, Jow. (1997). *Internet 6-in-I.* New Delhi: Prentice Hall of India.

Karl Schwartz. (2000). *Training Guide-Microsoft Windows 2000.* DDC Publishing Inc.

EPC- 2 : स्वयं को समझना

(Understanding the Self)

Year-1	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाएँ :

- आत्म परिचय और आत्म सम्मान की संकल्पना एवं आयामों की व्याख्या कर सकेंगे ।
- आत्म -सचेतनता को विकसित करने के सोपानों की पहचान कर सकेंगे तथा इसे प्रभावशाली जीवन-यापन की शर्त के रूप में समझाने में सक्षम होंगे ।
- आत्म-अभिप्रेरणा एवं आत्म-प्रत्यक्षीकरण की आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे ।
- आत्म परिचय की समस्याएँ एवं शिक्षक की व्यावसायिक विकास की युक्तियाँ बता सकेंगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : आत्म-संकल्पना (Self Concept)

- आत्म-संकल्पना ।
- व्यक्तिगत आत्म के आयाम, मास्लो (Maslaw's) की आवश्यकताओं का पदानुक्रम ।
- आत्म-परिचय और आत्म सम्मान ।
- आत्म-स्वीकृति : बिना किसी सकारात्मक या नकारात्मक निर्णय से आत्म के सभी पहलुओं को देखने और पहचानने की क्षमता ।
- आत्म-ज्ञान की माँग : व्यक्ति की शक्ति और कमजोरियों का वास्तविक ज्ञान ।

इकाई : 2 : आत्म प्रत्यक्षीकरण का विकास (Development of Self-Actualization)

- आत्म सचेतनता : स्वयं को वस्तुनिष्ठ के रूप में देखने की क्षमता (खूबियों व कमियों के साथ), वर्तमान में जीना, अतीत की शर्तों और प्रतिक्रियाओं से मुक्त, स्वयं को सचेतनता से पहले देखना, प्रभावशाली जीवन-यापन के लिए एक अपरिहार्य शर्त के रूप में आत्म सचेतनता ।
- आत्म-अभिप्रेरणा, स्वतंत्र चिंतन के विकास के लिए अपनी क्षमताओं और अवसरों के प्रति समालोचनात्मक सचेतनता, समालोचनात्मक चिंतन एवं सृजनात्मक चिंतन, निर्णय एवं समस्या समाधान ।
- आत्म प्रत्यक्षीकरण : अर्थ एवं विकास की युक्तियाँ ।

इकाई : 3 : व्यावसायिक पहचान का विकास
(Development of Professional Identity)

- शिक्षक की व्यावसायिक पहचान : विभिन्नताएँ (लिंगगत सांबंधिक, सांस्कृतिक) आंतरिक विश्वास ।
- शिक्षक की विभिन्नताओं के परिणाम से उत्पन्न रूढ़िबद्ध तथा पूर्वाग्रह : शिक्षक की व्यावसायिक पहचान से संबंधित समस्या : आत्म-सम्मान का अभाव, सामाजिक स्थिति ।
- व्यावसायिक पहचान से संबंधित समस्याओं का अन्वेषण ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक-छात्राध्यपिका को किसी एक विषय पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है ।

- कोई प्रासंगिक कार्य में भाग लेने के संदर्भ में व्यक्ति की विशेषताओं, सीमाओं, अवसरों एवं असुविधाओं की पहचान तथा अभिलेखों का प्रस्तुतीकरण करना है ।
- विविध संदर्भों में अंतः-वैयक्तिक संबंधों से संघर्ष से / निबटने के तरीकों का अभिलेख प्रस्तुतीकरण करना है ।
- तनावपूर्ण या भावात्मक / संवेगात्मक रूप से पूर्ण परिस्थितियों का अभिलेख प्रस्तुतीकरण करना है जिससे आत्म-पर्यवेक्षण से लचीलापन निर्माण हो सके ।

❑❑❑

EPC- 3 : कला निष्पादन (नाटक)
(Performing Art -Drama)

Year-1	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- कक्षा से बाहर सामूहिक सचेतनता जगाने के लिए अनुदेश को उपकरण मानकर नाटक के प्रकार्य का अध्ययन कर पाएँगे ।
- नाटक की प्रगति तथा कलाकारों के योगदान के लिए जागरूकता जगा सकेंगे ।
- माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा रूप में नाटक की भूमिका पहचान पाएँगे ।
- नाटक के लिए उपयुक्त क्षेत्रों की खोज करना सीख पाएँगे ।
- सामूहिक नाटक द्वारा विद्यार्थियों में अधिगम की कुशलता वृद्धि कर सकेंगे ।
- शिक्षण अधिगम में नाटक का उपयोग सीख पाएँगे ।
- अधिगम में नाटक के मार्गदर्शक के रूप में शिक्षक की भूमिका जान पाएँगे ।

इकाई : 1 : पाठ्य विषय-वस्तु : (Infromation Drama)

- नाटक का परिचय ।
- अर्थ, आधुनिक जीवन में नाटक की प्रासंगिकता ।
- नाटक के तत्व : साहित्यिक तत्व,ा तकनीकी तत्व, निष्पादन तत्व, चरित्र अंतर्वस्तु, उद्देश्य, संवाद, संकेत, दर्शक ।
- थिएटर के रूप और शैली : कामदी और त्रासदी नाटक, सोलों ही का गायन निष्पादन, मेलो ड्रामा (अद्भुत रस प्रधान नाटक), यथार्थवाद / प्रतीक वाद, बैलेट और नृत्य पथप्रांत नाटक, लोक नाटक आदि ।
- क्रियाकलाप : शरीर और गति के लिए अभिनय अभ्यास ।
- क्रियाकलाप : स्वर और वाक् अभिव्यक्ति के लिए अभ्यास ।
- क्रियाकलाप : नाटकीय शैलियों की पहचान के लिए फिल्म अथवा वीडीओ निरीक्षण ।
- क्रियाकलाप : किसी छात्र की अनुभूति पर आधारित एक कहानी निष्पादन का सृजन ।

इकाई : 2 : भारतीय लोक व पथप्रान्त नाटक : (Indian Folk & Street Drama)

- क्षेत्रीय लोक थिएटर–अपरा, नवरंग, स्वांग, थिएटर ।
- पथप्रांत नाटक पर लोक नाटक का प्रभाव, सामाजिक शिक्षा के रूप में पथप्रांत नाटक ।
- अधिगम शिक्षण के साधन के रूप में पथप्रांत नाटक की भूमिका ।
- क्रियाकलाप : पथप्रांत नाटक का अवलोकन एवं वीडीओ पर निरीक्षण ।
- क्रियाकलाप : छात्र जॉनलस और क्रियाकलापों का वीडीओ रिकार्ड ।

इकाई : 3 : नाटक प्रस्तुतीकरण : (Drama Production)

- नाटक प्रस्तुति : नाटक चयन, भाषा, शैली और चरित्र पर आधारित नाटक, नाटक में निर्धारण, नाटक की परिकल्पना, पात्र , सेट, पाषाक, आलोक सज्जा, ध्वनि रूपांकन ।
- पूर्वाभ्यास और नाटक मंचस्थ संचालन में नाटक पाठ्यचर्या ।
- क्रियाकलाप : एक पथप्रांत नाटक का चयन / लेखन ।
- क्रियाकलाप : चयनात्मक पथप्रांत नाटक के लिए पात्र निर्धारण ।
- क्रियाकलाप : वेश-सज्जा, चयनात्मक पथप्रांत नाटक का संगीत ।

क्रियाकलाप : चयनात्मक नाटक का निर्देशन ।

- क्रियाकलाप : रंगमंच पर चयनात्मक नाटक प्रदर्शन ।
- क्रियाकलाप–छात्र जर्नल और क्रियाकलापों का वीडीओ रिकार्ड ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका को एक सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है ।

- तत्काल सांस्कृतिक क्षेत्र में एक लोकाभिनय के निरीक्षण पर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है ।
- एक पथप्रांत नाटक के लिए किसी सामाजिक विषय पर पांडुलिपि प्रस्तुत करनी है ।
- कक्षा में किसी विषय पर नाट्य रूप प्रस्तुत करना है ।

❑❑❑

EPC- 3 : ललित कला

(Fine Art)

Year-1	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- विभिन्न कलारूपों पर रिपोर्ट तैयार कर सकेंगे ।
- द्वि-आयामी एवं त्रि-आयामी शिक्षण सामग्री निर्माण के कौशलों का विकास कर सकेंगे ।
- स्थानीय-जगहों से सामग्री संग्रह करेंगे और अल्प-लागत और बिना लागत के उपकरण बना पाएँगे ।
- विभिन्न कला रूपों की प्रदर्शनी आयोजित कर पाऐंगे ।

पाठ्य-विषयवस्तु :

इकाई : 1 : दृश्य कला : (Visual Art)

- दृश्य कला में सृजनात्मकता, बाल-कला एवं लोक–कला के लक्षण, ललीत कला के विशिष्ट लक्षण, विद्यालयीन बालकों में ललित कला के कौशलों के क्षेत्र एवं उपयोगिता का विकास, विद्यालय में उपयोगिता मूलक कलात्मक क्रियाओं के कार्यान्वयन हेतु कार्यकारी योजना का विकास ।

इकाई : 2 : प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण :
(Survey of the Natural Resources)

- आवासीय स्थान में प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण जिनका प्रयोग लाभदायक कलात्मक सामग्री के निर्माण में किया जा सके, स्थानीय क्षेत्रो से उपयोगी कलात्मक सामग्री के नमूनों का संग्रह, नमूने के साथ रिपोर्ट जमा करना ।

इकाई : 3 : कला का पुनरुत्पादन : (Reproduction of Art)

- बाल-कला का पुनरुत्पादन, कला, हस्तशिल्प, परिदृश्य, जनजातीय फूल, सब्जियाँ, पेड़– पक्षी, जानवर, मानव आकृतियों सहित सचित्र पुस्तकें, पुस्तक आवरण, समाचार पत्र विज्ञापन, निमंत्रण पत्र, शुभेच्छा पत्रों का संग्रह कर प्रत्येक के न्यूनतम छः नमूनों को अलबम के रूप में उचित कैप्शन सहित जमा करना । विभिन्न सब्जियाँ, फल-फूल, पशु-पक्षी, मानव तथा घरों को चित्र श्यामपट पर अंकन करना ।

इकाई : 4 : संपूर्ण चित्रांकन : (Finish Drawing)

- फूलों, पक्षियों, जानवरों, मानव आकृतियों के रेखाचित्र, ज्यामितीय आकार, कपड़ो के डिजाइन के लिए आवश्यक पुष्प रूपांकन, पुस्तक आवरण, निमंत्रण पत्र व शुभेच्छा पत्र के लिए बहु-रंजित डिजाइन लाइन ब्लॉक एवं हाल्फटॉन प्रिंटिग हेतु डिजाइन की तकनीकों का निर्माण ।

इकाई : 5 : पेंसिल और रंजित नक्शा :
(Pencil and Coloured layout)

- पुस्तक आवरण डिजाइन हेतु पेंसिल व रंगीन नक्शे का निर्माण, निमंत्रण पत्र, शुभेच्छा पत्र डिजाइन व पोस्टर, डिजाइन की प्रस्तुति, ब्लॉक एवं साईन-बोर्ड प्रस्तुति के लिए डिजाइन वर्णमालाओं का निर्माण, चित्रों की मढ़ाई करके प्रदर्शनी की प्रस्तुति ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक-छात्राध्यापिका को किसी एक विषय पर सत्रीय-कार्य प्रस्तुत करना है ।

- ललित-कला के किन्हीं तीन कला-रूपों का संग्रह करके विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- पड़ोश में उपलब्ध दृश्यकला के निदर्शन पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- बच्चों के लिए अभिनन्दन संबंधी एक एलबम तैयार करना और उनका उपयुक्त नामकरण करना है ।

Tasks and Assignments :

Each student - teacher is required to submit assignment on ***any one*** of the following :

- Collection of any three forms of folk art and preparation of a detailed report.
- Preparation of a report on specimens of visual art avilable in the neighbourhood.
- Preparation of an album of greeting cards of children’s concern with appropriate caption.

❑❑❑

EPC - 3 : शास्त्रीय कला : संगीत

Performing Art (Indian Music)

Year-1	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- संगीत की मूल-संरचनाओं को जानेंगे तथा विभिन्न रागों, अलंकारों एवं तालों को जान कर जीवन में संगीत-मूल्यों के महत्व को समझ पाएँगे ।
- किसी-भी राग पर आधारित भजन और देशप्रेम के गीतों को गा सकने की कुशलता का विकास कर पाएँगे ।
- नाद स्वर आदि विभिन्न तकनीकी शब्दों को जान पाएँगे ।
- संगीत के कार्यक्रमों का संचालन कर पाएँगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : अलंकारों का अध्ययन : (Alankars)

- सा, रे, गा, मा, पा, धा, नि, सा—
- सागा, रेगा, मापा, माधा—
- सारेगा, रेगामा, गामापा, मापाधा—
- सारेगामा, रेगामापा—

इकाई : 2 : राग : (Ragas)

- भुपाली, काफी, खमाज, देश, आरोह, अवरोह, पकड़, एक छोटा खयाल, प्रत्येक राग और आलाप में बंदिश, किन्हीं दो रागों में बोलतान और तान ।

इकाई : 3 : गायन की हिंदुस्तानी शैली में किसी एक राग पर आधारित भजन तथा देशप्रेम के गीत : (Bajan & Patriotic song)

इकाई : 4 : ताल (Tala)

- त्रिताल, झपताल, एकताल, रूपक, दादरा, कहरवा, निर्द्धारित तालों के ठेकों का ज्ञान ।

इकाई : 5 : संगीत की पारिभाषिक शब्दावली : (Basic Tehrminologies of Music)

- ध्यनि, नाद, स्वर, सृति, सप्तक, संगीत, राग, थाट, वादी, संवादी, अनुवादी, खयाल, ध्रुपद, धमार, पूर्वांग, उत्तरांग, आलाप, बोलतान, तान, कोरब, संगीत, ओड़िशी संगीत ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किसी एक विषय पर सत्रीय कार्य लिखना अनिवार्य है ।

- किन्हीं पाँच रागों के उद्‌भव-विकास, स्वरूप और विभिन्नता पर एक लेख प्रस्तुत करना है ।
- गायन की हिन्दुस्तानी शैली में ओड़िया भजन के किन्हीं तीन रागों पर एक लेख प्रस्तुत करना है ।
- छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा बच्चों में संगीत -कला की गुणवत्ता को विकसित करने की चेष्टा पर एक लेख प्रस्तुत करना है ।

❑❑❑

EPC- 4 : शारीरिक शिक्षा और योग

(Physical Education & Yoga)

Year-1	Credit-2
Marks 50 (Ext. 40 +Int. 10)	Contact Hours 32

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- मानव जीवन में शारीरिक शिक्षा के महत्व को समझ पाएँगे ।
- शारीरिक शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों की सूची बना पाएँगे ।
- शांतिपूर्ण जीवनयापन के लिए योगाभ्यास कर पाएँगे ।
- योग व जीवन-लक्ष्य के बीच संपर्क को विकसित कर पाएँगे ।

पाठ्य विषयवस्तु :

इकाई : 1 : शारीरिक शिक्षा :

(Understanding Physical Education)

- परिचय, आवश्यकता, क्षेत्र और उद्देश्य ।
- विभिन्न शारीरिक शैक्षिक कार्यकलापों का संगठन ।
- शारीरिक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका ।
- कुछ सामान्य खेलों के बारे में प्राथमिक धारणा ।

इकाई : 2 : शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम

(Programmes of Physical Education)

- शारीरिक शिक्षा के कुछ साधारण कार्यक्रमों पर प्राथमिक धारणा ।
- खेल का कार्य-मूल्य और अवकाश छुट्टी का महत्व ।
- मध्यान्तर छुट्टी की आवश्यवकता, अवकाश क्रियाकलापों के प्रकार और उनका प्रबंध ।
- स्कूल की समय : सारिणी में अस्थायी खेल और अवकाश ।
- NCF-2005 के संदर्भ में शारीरिक शिक्षा ।

इकाई : 3 : योग और जीवन-लक्ष्य : (Yoga & Liife Goals)

- योग की संकल्पना, आवश्यकता, उद्देश्य ।
- अस्टांग योग ।
- योगाभ्यास की उपयोगिताएँ, आसन के प्रकार और अंगभंगिया ।
- योगाभ्यास और जीवन-लक्ष्य के अंत:संबंध ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका को किसी एक विषय पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है ।

- स्कूल में होनेवाले विभिन्न शारीरिक शैक्षिक कार्यक्रमों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- विभिन्न योगाभ्यासों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- माध्यमिक स्कूल के छात्रों के लिए मनोरंजन कार्यकलापों के एक सेट का विकास करना है ।

❑❑❑

(ख) : पाठ्यचर्या एवं शिक्षण कला का अध्ययन

B. Curriculum and Pedagogic Studies (CPS)

CPS [I : पाठ्यचर्या में भाषा]

(Language Across the Curriculum)

Year-1	Credit-2
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाएँ :

- अध्येता की भाषाई पृष्ठभूमि को पहचान कर उन्हें अपने घर के भाषाई व्यवहार तक और बोली से मानक भाषा तक आने में सहायता दे सकेंगे ।
- अध्येता की संप्रेषण युक्तियों के विकास के लिए कक्षा-शिक्षण के प्रोक्तिगत स्वरूप तथा सामग्री निर्माण के उपायों का उपयुक्त विश्लेषण करेंगे ।
- अध्येता में वाचन तथा लेखन कौशलों के विकास करके उनके अंतःसंबंध का सरलीकरण कर पाएँगे ।
- किसी विषय के शिक्षक अध्येताओं की भाषा को समृद्ध बनाने के लिए अपनी भूमिका जान सकेंगे ।

पाठ्य विषय-वस्तु :

इकाई : 1 : अध्येताओं की भाषाई पृष्ठभूमि : (Language background of Learners)

- अध्येताओं की भाषाई विभिन्नता -बोली, क्षेत्रीय, विभिन्नता तथा मानक भाषा, अधिगम में प्रथम भाषा की सार्थकता ।
- घरेलू भाषा बनाम विद्यालयीन भाषा-स्थानांतर एवं संचालन / चुनौतियाँ एवं युक्तियाँ ।
- बहुभाषी संदर्भ में चुनौतियाँ एवं युक्तियाँ ।

इकाई : 2 : कक्षा में भाषा प्रयोग : (Language in Classroom)

- कक्षा शिक्षण का स्वरूप तथा भाषा की सार्थकता ।
- संप्रेषण कौशल / प्रश्न, चर्चा, सहभागिता तथा पारस्परिक क्रियाओं द्वारा मौखिक कौशलों का विकास ।
- विभिन्न प्रकार के विषयों में भाषा, कला एवं विज्ञान, विभिन्न विषय क्षेत्रों में अधिगम उपलब्धियों को सुनिश्चित करने में भाषा की भूमिका ।

इकाई : 3 : वाचन-लेखन में सह-संबंध : (Reading-Writing connection)

- सूचना तथा तथ्य संग्रह के लिए वाचन, समीक्षात्मक आलोचना के विकास की युक्तियाँ, जैसे–स्कैनिंग, स्किमिंग, गंभीरवाचन, नोट बनाना आदि ।
- विभिन्न संदर्भित क्षेत्रों में वाचन–लेखन संबंध–एक लेख की प्रस्तुति के लिए नोट की तैयारी, सारांश के लिए तथ्य संग्रह का प्रयोग ।
- विभिन्न प्रयोजनों के लिए लेखन-रिपोर्ट प्रस्तुति, अनुच्छेद लेखन, व्याख्यात्मक विचार, विस्तार, विभिन्न रूपों में सूचना उपस्थापन जैसे–फ्लो चार्ट, पाई चार्ट, आरेख, हिस्टोग्राम आदि ।
- लेखन प्रणाली, उत्पादक, विचार-संग्रह, प्रारूप, पुनरावृत्ति और निष्कर्ष ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किसी एक विषय पर सत्रीय कार्य लिखना अनिवार्य है ।

- माध्यमिक स्तर पर अध्येताओं में भाषाई विभिन्नता की समस्याओं तथा समाधान के उपायों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- माध्यमिक स्तर पर अध्येताओं के वाचन / लेखन कौशल के उपादानों (उप-कौशलों) के विकास के लिए एक कार्य-योजना पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।
- माध्यमिक स्तर के पाठ्य विषयों में से किसी विषय पर फ्लो-चार्ट, पाई-चार्ट / वृक्ष आरेख के द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।

प्रस्तवित पाठ्य :

- Daniel, Larsen--Freeman (2010). *Teachniques and principles of language teaching (2nd Edn.)* London: Oxford University Press.
- Kumar, Krishna (2008). *The child's language and the teacher-A handbook.* New Delhi: National Book Trust.
- Lightbown, P.M. and Spada, N. (1999). How languates are learned. Oxford: Oxford University Press.

❑❑❑

CPS- 2 : शैक्षिक मूल्यांकन
(Learning Assessment)

Year-1	Credit-2
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- ➢ शैक्षिक मूल्यनिर्धारण तथा मूल्यांकन के स्वरूप, उद्देश्य तथा प्रकार के बारे में जान पाएँगे ।
- ➢ विद्यालयीन परिवेश में सतत एवं व्यापक शैक्षिक मूल्यनिर्धारण के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों एवं तकनीकों का विकास तथा प्रयोग कर पाएँगे ।
- ➢ अधिगम तथा शिक्षण की गुणवत्ता की वृद्धि में शैक्षिक मूल्यनिर्धारण की प्रक्रियाओं व महत्व को समझा सकेंगे ।
- ➢ अधिगम तथा अध्यताओं के मूल्यनिर्धारण की प्रवृत्तियों तथा समस्याओं का विश्लेषण कर सकेंगे ।
- ➢ आधारभूत सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर मूल्यनिर्धारण के परिणामों का विश्लेषण तथा व्याख्या कर सकेंगे ।

पाठ्यक्रम विषयवस्तु :

इकाई : 1 : मूल्यनिर्धारण, मूल्यांकन एवं अधिगम : (Assesment Evaluation & Learning)

- ➢ मूल्य-निर्धारण एवं मूल्यांकन : अर्थ; मूल्य-निधारण के उद्देश्य (अधिगम-शिक्षण के विकास के संदर्भ में); मूल्यांकन के उद्देश्य (स्थापन, निदान, पदोन्नति, प्रमाणीकरण, सूचना प्रदान); मूल्य-निर्धारण एवं मूल्यांकन में पारस्परिक क्रिया ।
- ➢ मूल्य-निर्धारण के वर्गीकरण के आधार : उद्देश्य (स्थापन, निदान, सार),क्षेत्र (अध्यापक निर्मित, मानकीकृत), विशेष गुण मापन (उपलब्धि, अभिरुचि, अभिवृत्ति आदि), संगृहित सूचनाओं का स्वरूप (गुणात्मक, परिमाणात्मक), प्रतिक्रिया की रीति (मौखिक, लिखित, निष्पादन) उपस्थापन का स्वरूप (प्रतिमानक एवं मानदंड संदर्भित) तथा संदर्भ (अंतर्मुखी, बहिर्मुखी) ।

  (उपयुक्त शब्दों को उपयुक्त उदाहरणों के द्वारा समझा जाएगा ।)
- ➢ सतत एवं व्यापक मूल्य-निर्धारण : अर्थ, महत्व एवं क्षेत्र; अधिगम एवं मूल्य-निर्धारण : अधिगम का मूल्य-निर्धारण, अधिगम के लिए मूल्य-निर्धारण, अधिगम के रूप में मूल्य निर्धारण, CCA vs CCE.
- ➢ अधिगम का मूल्य-निर्धारण : अधिगम अनुभव के अंत में मूल्य-निर्धारण; अधिगम के मूल्य-निर्धारण की प्रक्रिया-परीक्षण, मापन तथा मूल्य-निर्धारण की परीक्षण -विहीन विधियाँ-निरीक्षण, साक्षात्कार, F.G.D.

इकाई : 2 : अधिगम के लिए मूल्यनिर्धारण : (Assessment for Learning)

- ➢ अर्थ, महत्व तथा उद्देश्य; स्वरूप-रचनात्मक, अधिगम में निरंतरता, व्यापकता (अधिगम के सभी पक्षों का मूल्य-निर्धारण-संज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा मनोमानक), सांस्कृतिक, अनुक्रियाशीलता (मूल्य-निर्धारण में अध्येता के लोक सांस्कृतिक तत्व व्यापक रूप से प्रयुक्त होते हैं), CCA की प्रासंगिकता ।
- ➢ उपकरण एवं तकनीकें : औपचारिक (परीक्षण, निरीक्षण, समय-सारणी, विडियो रिकॉर्डिंग आदि) तथा अनौपचारिक (प्रतिभागियों का निरीक्षण, वार्तालाप, नोट्स लेना, साक्षात्कार कार्य में नियोजित करना आदि), परीक्षण का प्रयोग (विभिन्न रूपों का उपलब्धि परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण, योग्यता परीक्षण आदि) तथा परीक्षण विहीन (शाब्दिक तथा अशाब्दिक क्रियाकलपों का विश्लेषण, मननशील पत्रिकाएँ, परियोजनाएँ, पोर्टफोलिया आदि) उपकरण, बहुविध प्रणालियों तथा उपकरणों का प्रयोग (विशिष्ट परिस्थितियों में संयोजना) ।
- ➢ स्वयं तथा साथियों के मूल्य-निर्धारण की तकनीकें -निरीक्षण, विभागीकरण/(पोर्टफोलिओ) साक्षात्कार प्रभावी दलगत आलोचना, सरनामा (रुब्रिक्स) ।
- ➢ अध्येता तथा अभिभावकों के लिए फीड़बैक की तैयारी, शिक्षकों के लिए इसकी आवश्यकता एवं रीति (समयानुसार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रगति के लिए); CCA में समुदाय की भूमिका ।

इकाई : 3 : परीक्षण का निर्माण तथा प्रयोग सोपान : (Construction of test and its use)

योजना, प्रस्तुति, चेष्टा तथा मूल्यांकन :

(Construction of Test & Its use)

- परीक्षण की प्रस्तुति : परीक्षण सामग्री निर्माण के सिद्धांत-उद्देश्य आधारित मद, विस्तृत तथा सीमित प्रतिक्रिया वर्ग, वस्तुनिष्ठ मद (मुक्त प्रतिक्रिया वर्ग-लघु उत्तरीय-तथा-समाप्ति/ पूर्ण उत्तर, नियत प्रतिक्रिया वर्ग, मिलान, अनिवार्य/ विकल्प चयन, बहुविकल्प चयन) सामग्रियों का एकत्रिकरण तथा संपादन ।
- अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ : विश्वसनीयता, वैधता, व्यवहार्यता (संकल्पना -तथा प्रयोग पर चर्चा)
- परीक्षण प्रशासन तथा छात्रों के निष्पादन का विश्लेषण, रिपोर्ट प्रस्तुति तथा अधिगम की अभिवृद्धि में इसका प्रयोग ।

इकाई : 4 : मूल्य-निर्धारण का मुद्दा तथा नीति व्यवस्था : (Issues in Assesment & Policy Provisions)

- सांप्रतिक व्यवस्था : संकलनात्मक मूल्य-निर्धारण (सामयिक एवं सामान्य / उत्तम समाप्ति परीक्षाएँ) तथा मूल्यांकन; प्रतियोगितामूलक परीक्षाएँ–अध्येताओं, शिक्षा-व्यवस्था तथा समाज पर इसका विपरीत प्रभाव ।
- मुद्दे तथा समस्याएँ; अंक प्रदान बनाम ग्रेड, वस्तुनिष्ठता बनाम विषय-निष्ठता बंद बनाम मुक्त परीक्षा प्रणाली, असंज्ञानात्मक पक्षों की उपेक्षा, विविधता पूर्ण हुए अध्येताओं के मूल्य-निर्धारण के लिए विविध विधियों तथा उपकरणों का प्रयोग न करना ।
- नीति परिप्रेक्ष : NPE-1986/92, NCF-2005, RCFCE ACT-2009 की सिफारिशें; अवरोध-नीति और मूल्य-निर्धारण तथा अधिगम की गुणवत्ता के लिए इसका तात्पर्य ।
- मूल्य निर्धारण में विकासनशील व्यवस्था : निर्धारण, प्रतिभागी मूल्य-निर्धारण ।

इकाई : 5 : प्रारंभिक सांख्यिकी : (Elementary Statistics)

- केंद्रीय प्रवृत्ति के माप-मध्यमान, मध्यांक, बहुलांक-प्रयोग तथा सीमाएँ ।
- विचलन के माप : प्रसार, औसत विचलन, चतुर्थांश विचलन, मानक विचलन-प्रयोग तथा सीमाएँ ।
- सह-संबंध : अर्थ तथा प्रयोग; स्थिति-अंतर्विधि एवं गुणन-घात-विधि से सहसंबंध गुणांक का परिकलन ।
- सामान्य वक्र की विशेषताएँ तथा उसके प्रयोग ।
- मानक प्राप्तांक– Z–प्राप्तांक, T–प्राप्तांक तथा प्रतिशतांक ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका को निम्न में से किन्हीं दो पर सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है ।

- 50 वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की तैयारी; किसी भी विद्यालयीन विषय में से प्रत्येक वर्ग के परीक्षण में से कम से कम 5 वस्तुनिष्ठ परीक्षण प्रस्तुत करना है ।
- किसी विषय पर एक उपलब्धि परीक्षण (25 अंक वाले) का निर्माण, संचालन, एवं परिणाम प्रस्तुत करना है ।
- एक अकादमिक सत्र में किसी कक्षा CCA के क्रियाकलापों के लिए एक योजना प्रस्तुत करना है ।
- माध्यमिक विद्यालयों में वर्तमान के CCA अभ्यासों की प्रगति पर कार्य करना है ।
- कक्षा में किसी एक विषय में अध्यतेओं द्वारा परीक्षा में प्राप्त अंकों का विश्लेषण तथा सम्मिलित होने के लिए एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना है ।

संदर्भ ग्रन्थ :

- डॉ० मृदुला रावत तथा बीना कपूर –(2008) शिक्षा में मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी-विनोद पुस्तक मंदिर, कायार्यल - राघव मार्ग-आग्रा-2
- ज्योति शर्मा (2014)–शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन अग्रवाल पब्लिकेशनस्, ज्योति ब्लॉक्स संजन हाउस, आग्रा-2
- डॉ० बिपिन अस्थाना तथा आस्थाना-अग्रवाल पब्लिकेशनस्, 28/115 ज्योति ब्लॉक्स, संजय प्लेस, आगरा-2
- Anderson, L.W. (2003). *Classroom assessment: Enhancing the quality of teacher decision making.* Mahwah, New Jersey: Lawrence Erlbaum Associates.
- Burke, K. (2005). *How to assess authentic learning* (4th Ed.) Thousand Oaks, CA: Corwin.
- Cooper, D. (2007). *Talk about assessment: Strategies and tools to improve leaning.* Toronto, Ontario: Thomson Nelson
- Danielson, C. (2002). *Enhancing student achievement: A framework for school improvement.* Alexandria, VA: Association for Supervision and Curriculum Development.

- Garrett, H.E. (1973), *Statistics in psychology and education* (6th ed.). Bombay: Vakils, Ferrers & Simon.
- Gronlund, N.E. & Linn, R.L. (2009). *Measurement and assessment in teaching* (10th Edn.). Upper Saddle River, NJ: Person Education, Inc
- Newman, F.M. (1996). *Authentic achievement: Restructureing schools for intellectual quality.* San Francisco, CA:Jossey-Bass.
- Nitko, A.J. (2001). *Educational assessment of students* (3rd ed.). Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall.
- Popham. W.J. (1993). *Modern educational measurement.* Englewood Cliffs, N.J. : Prentice Hall.
- Popham, W.J. (2010). *Classroom assessment: What teachers need to know* (6th ed.). New York: Prentice Hall
- Shepard. L.A. (2000). The role of assessment in learning culture. *Educationa Researcher, 4-14.*
- Stiggins, R. (2005), *Student-involved classroom assessment.* (4th ed.). Columbus, Ohio: Merrill.

❑❑❑

CPS- 3 (a & b) : हिंदी भाषा शिक्षण

Pedagogy of Language : (Hindi)

Year-1	Credit-2
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

उद्देश्य :

इस पाठ्क्रम की समाप्ति के बाद छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाएँ :

- विद्यालयीन पाठ्य-चर्या में हिन्दी शिक्षण के महत्त्व को समझ सकेंगे ।
- द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य जान सकेंगे ।
- बहुभाषी संदर्भ में हिन्दी अधिगम और शिक्षण की समस्याओं का पता लगा सकेंगे ।
- हिन्दी शिक्षण के विभिन्न कौशलों तथा विधियों को समझ सकेंगे ।
- विभिन्न विषयों पर पाठ-योजना बना सकेंगे ।
- हिन्दी भाषा तथा उसकी ध्वनि-व्यवस्था से परिचित हो सकेंगे ।
- हिन्दी-व्याकरण से परिचित हो पाएँगे ।

पाठ्य विषय-वस्तु :

इकाई : 1 : विद्यालय की पाठ्यचर्या में हिन्दी (द्वितीय भाषा)
(Hindi as 2nd Language in School curriculum)

- भारत में भाषा-निति ।
- NPE-1986 तथा **NCF-2005** के संदर्भ में हिन्दी ।
- द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य ।
- बहुभाषी संदर्भ में हिन्दी अधिगम और शिक्षण की समस्याएँ ।

इकाई : 2 : हिन्दी भाषा शिक्षण-अधिगम
Teaching -Learning of Hindi

- भाषाई कौशलों का सामान्य ज्ञान :

  श्रवण कौशल की संकल्पना, श्रवण कौशल को विकसित करने के उपाय ।

  भाषण कौशल की संकल्पना ।

  भाषण कौशल को विकसित करने के उपाय ।

  वाचन कौशल की संकल्पना, वाचन कौशल को विकसित करने के उपाय, लेखन कौशल की संकल्पना,लेखन-कौशल को विकसित करने के उपाय ।
- शिक्षण विधियाँ

  व्याकरण अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, संरचना विधि, अभिक्रमित स्वाध्याय विधि ।

इकाई : 3 : पाठ-नियोजन (Lesson Planing)

- पाठ-नियोजन का अर्थ और महत्व ।
- गद्य, पद्य और व्याकरण की पाठयोजनाएँ ।
- **5E** और आइकन नमूनों के आधार पर पाठ-योजना ।
- शिक्षण-सामग्री (श्रव्य-दृश्य उपकरण) ।

इकाई : 4 : भाषा का सामान्य ज्ञान (Concept of Language)

- भाषा का अर्थ, परिभाषाएँ ।
- भाषा की विशेषताएँ ।

- हिन्दी ध्वनियाँ, स्वर और व्यंजन का वर्गीकरण ।
- ओड़िआ भाषा-भाषी अध्यताओं की हिन्दी उच्चारणगत और लेखनगत त्रुटियाँ और उनका निराकरण ।
- हिन्दी साहित्य में छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद (अर्थ और विशेषताएँ) ।

इकाई : 5 : पाठ्य -विषयों का शैक्षिक उपचार

Pedagogical Treatment of content.

नीचे दाहिनी ओर के खाके में दिए गए पाठ्य-विषयों का विश्लेषण किया जाएगा । (शैक्षिक उपचार में रूप में)

पाठ्य-विषय :

गद्यपाठ : मधुरभाषण, देश प्रमी संन्यासी, गिल्लू ।

पद्यपाठ : अनमोल वाणी, (कबीर, तुलसी, रहीम) ।

व्याकरण : संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय, उपसर्ग, प्रत्यय, लिंग, वचन, कारक, परसर्ग ।

शैक्षिक विवेचन के पहलू :

- भाषा के विषयों की पहचान, नवीन शब्द-संपदा, अभिव्यक्ति, व्याकरण के घटक ।
- भाषा-कौशलों के अधिगम में सहायता पहुँचाने के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले पाठ्य-विषय में उपलब्ध अवसरों का पता लगाना ।
- अधिगम के उद्देश्यों का विनिर्देशन ।
- विभिन्न विधियों / प्रणालियों / युक्तियों का चयन ।
- शिक्षण-अधिगम सामग्री निर्माण ।
- अधिगम के क्रिया -कलापों की रूपरेखा बनाना ।
- प्रभावपूर्ण पारस्परिक क्रिया-कलापों के लिए अध्यापक-अध्येता -क्रिया कलापों की योजना बनाना ।
- मूल्य-निर्धारण की युक्तियाँ (विकासात्मकता पर विशेष ध्यान) ।

सत्रीय कार्य :

प्रत्येक छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका को किन्हीं दो विषयों पर कार्य करना अनिवार्य है :

- **5E** और आइकन **ICON** नमूनों का अनुसरण करते हुए निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से विषयों पर पाँच पाठ-योजनाएँ तैयार करनी है । (प्रत्येक नमूनों से कम-से-कम दो पाठ-योजनाएँ) ।
- निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से किसी भी विषय पर एक रूपरेखा प्रस्तुत करके उसकी पुष्टि करते हुए परीक्षण-मदों का विकास करना है ।
- अध्यताओं की हिन्दी लेखनगत त्रुटियों को पहचानकर उनके निराकरण के लिए उपचारात्मक प्रश्नावली तैयार करनी है ।
- निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से किसी एक विषय के लिए (भाषा के मदों-नवीन शब्दावली, अभिव्यक्ति, व्याकरण के घटक) को पहचान कर शैक्षिक उपचार की रूपरेखा तथा अधिगम क्रिया-कलापों की रूपरेखा तैयार करनी है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. भाषा शिक्षण : सिद्धांत और प्रविधि–डॉ० मनोरमा गुप्त-केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।
2. भाष 1-2 की शिक्षण विधियाँ और पाठ-नियोजन-डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा–विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।
3. हिन्दी : उद्‌भव, विकास और रूप–डॉ० हरदेव बाहरी ।
4. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना ।
   डॉ० वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन (पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स) पटना,
5. आधुनिक हिन्दी व्याकरण स्वरूप एवं प्रयोग–डॉ० भारती खुबालकर, साहनी पब्लिकेशन, दिल्ली ।
6. शुद्ध हिन्दी कैसे सीखें–राजेन्द्र प्रसाद सिन्हा, भारती भवन (पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, पाटना) ।
7. अच्छी हिन्दी–रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद ।
8. शुद्ध हिन्दी-डॉ० हरदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहावाद ।
9. भाषा-विज्ञान की भूमिका–देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली-**6** ।
10. ध्यनि-विज्ञान, गोलोक बिहारी धल, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना ।
11. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल ।
12. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, गुलाब राय ।
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास : एक अध्ययन, डॉ० त्रिलोचन पाणिग्राही ।

❑❑❑

CPS-3 (କ ଓ ଖ) ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷଣ

Year-1	Credit-2
Marks 100 (Ext. 80 +Int. 20)	Contact Hours 64

ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ : ଏହି ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ପରିସମାପ୍ତି ପରେ ।

- ବିଦ୍ୟାଳୟର ଗୁରୁ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ପାଠ୍ୟକ୍ରମରେ ମାତୃଭାଷା ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ସ୍ଥାନ ଓ ମହ ୍ୱ ବିଷୟରେ ବୁଝିପାରିବେ ।
- ବହୁଭାଷୀ ସଂଦର୍ଭରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଅର୍ଜନରେ ଥିବା ସମସ୍ୟା ସମାଧାନ କରିବା କୌଶଳର ବିକାଶ କରିପାରିବେ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଅର୍ଜନ ନିମନ୍ତେ ବିଭିନ୍ନ କୌଶଳ ବ୍ୟବହାର କରିପାରିବେ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ବିଭିନ୍ନ ବ୍ୟବହାରିକ ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ଆବଶ୍ୟକ ଉପଯୁକ୍ତ ଶୈକ୍ଷିକ-ଶୈଳୀ ନିର୍ଣ୍ଣୟ କରିପାରିବେ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା-ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସବିଶେଷ ମୂଲ୍ୟାୟନ ପାଇଁ ଆବଶ୍ୟକ ପଦ୍ଧତି ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିପାରିବେ । ବିଜ୍ଞାନର ମୂଳତ ୍ୱ ଏବଂ ତା'ର ପ୍ରାସଙ୍ଗିକତାର ବ୍ୟାଖ୍ୟା କରିପାରିବେ ।
- ନବମ ଓ ଦଶମ ଶ୍ରେଣୀରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ପାଠ୍ୟବସ୍ତୁକୁ ଉପଯୁକ୍ତ ଶୈକ୍ଷିକ ଶିକ୍ଷଣ ଶୈଳୀରେ ଉପଯୋଗ କରିବା ପାଇଁ ଯୋଜନା କରିପାରିବେ ।

ବିଷୟ ପାଠ୍ୟ-ବସ୍ତୁ :

ଏକକ-୧-ବିଦ୍ୟାଳୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମରେ ମାତୃଭାଷା ଓଡ଼ିଆ ।

- ପ୍ରତ୍ୟେକ ମାନବ ଜୀବନ ଓ ଶିକ୍ଷାକ୍ଷେତ୍ରରେ ମାତୃଭାଷାର ଗୁରୁତ୍ୱ ।
- ଓଡ଼ିଶାର ବିଦ୍ୟାଳୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମରେ ମାତୃଭାଷା ରୂପେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ସ୍ଥାନ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷା ଯୋଜନା **(NPE, 1986)**ରେ ସୁପାରିଶ ହୋଇଥିବା ଭାଷାନୀତି (ତ୍ରିଭାଷୀ ସୂତ୍ର, ପ୍ରାଥମିକ ଓ ମାଧ୍ୟମିକ ସ୍ତରରେ)
- ପ୍ରାଥମିକ ଓ ମାଧ୍ୟମିକ ସ୍ତରରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷା ଗ୍ରହଣର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ଭାଷା କୌଶଳରେ ଅନ୍ତରନିର୍ଭରତା ।
- ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ଭାଷା କୌଶଳ ଚତୁର୍ଦ୍ଧନ୍ତର ପ୍ରଣାଳୀ ଆହରଣ ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟ ନୀତି ।

ଏକକ-୨-ଓଡ଼ିଆ ଶିକ୍ଷାଦାନ ଏବଂ ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ଶୈକ୍ଷିକ ପନ୍ଥା ।

- ମାତୃଭାଷା ରୂପେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ଅଧ୍ୟୟନ ଓ ଆହରଣର ମନସ୍ତା ି୍ୱକତା ।
- ବହୁଭାଷିକ ସଂଦର୍ଭରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ଜ୍ଞାନାର୍ଜନ ସମ୍ପର୍କୀୟ ସମସ୍ୟା ଓ ବିଷୟ ।
- ଆଧୁନିକ ଶିକ୍ଷାଦାନ ପଦ୍ଧତିବନାମ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷାଗ୍ରହଣରେ ପାରମ୍ପରିକ ଶିକ୍ଷାଦାନ ପଦ୍ଧତି ।
- ଶିକ୍ଷାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷାଗ୍ରହଣର ବିଭିନ୍ନ ଉପାୟ ଓ କାର୍ଯ୍ୟନୀତି ।
- ଓଡ଼ିଆ ଗଦ୍ୟ :
  ପୂର୍ଣ୍ଣ ପଠନ / ସାମାନ୍ୟ ପଠନ (Detailed/Non-Detailed)
- ଓଡ଼ିଆ ପଦ୍ୟ ।
- ଓଡ଼ିଆ ରଚନା ।
- ଓଡ଼ିଆ ବ୍ୟାକରଣ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଶବ୍ଦଭଣ୍ଡାର ସମୃଦ୍ଧ ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟନୀତି,ଶବ୍ଦ ଗଠନ ଏବଂ ବନାନ କୌଶଳ ।
- ସୃଜନଶୀଳ ରଚନା କୌଶଳ ଅଭିବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟନୀତି ।

ଏକକ-୩-ଓଡ଼ିଆରେ ପାଠ୍ୟ କ୍ରମୀୟ କାର୍ଯ୍ୟ-କଳାପ ।

- ଏକକ ଯୋଜନା ପ୍ରଣାଳୀର ପ୍ରସ୍ତୁତି ।
- **5E & Icon Models** ରଚନାତ୍ମକ ଶୈଳୀର ଅନୁକରଣରେ ଯୋଜନା ପ୍ରସ୍ତୁତି ।
- ଅଧ୍ୟୟନ ସୂତ୍ରାବଳୀ ଓ ଅଧ୍ୟୟନ ଯୋଜନା କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଅଧ୍ୟୟନର ମୂଲ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ : ବୋଧଗମ୍ୟତା ଏବଂ ପରିପ୍ରକାଶ ।
- ଦକ୍ଷତାର ଆକଳନ, ବସ୍ତୁନିଷ୍ଠ ଆଧାରିତ ଓ ବସ୍ତୁନିଷ୍ଠ ପରୀକ୍ଷଣ ।
- ଓଡ଼ିଆରେ ବିଭାଗୀକରଣର ମୂଲ୍ୟନିର୍ଦ୍ଧାରଣ ।

- ଓଡ଼ିଆ ଶିକ୍ଷାଗ୍ରହଣର ବିସ୍ତୃତ ମୂଲ୍ୟନିର୍ଦ୍ଧାରଣ, ମାନ୍ଦା ଶିଶୁଙ୍କ ପାଇଁ ପ୍ରତିକାରକ ମାପନର ଯୋଜନା ।

ଏକକ-୪-ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଆହରଣରେ ଭାଷା ବିଜ୍ଞାନର ପ୍ରାସଙ୍ଗିକତା ।

- ଭାଷାର ମୂଳତ ୍ୱ : ଧ୍ୱନି, ଶବ୍ଦ ଭଣ୍ଡାର ଏବଂ ସଂରଚନା ।
- ଓଡ଼ିଆ ଧ୍ୱନି : ପ୍ରକାର ଏବଂ ଉଚ୍ଚାରଣ ଶୈଳୀ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଶବ୍ଦ ଭଣ୍ଡାର : ପ୍ରକାର (ତତ୍‌ସମ, ତଦ୍‌ଭବ, ଦେଶଜ, ବିଦେଶୀ) ।
  ଶବ୍ଦ ଗଠନ ପ୍ରକ୍ରିୟା ଓ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ (ଉପସର୍ଗ, ଅନୁସର୍ଗ, ପ୍ରତ୍ୟୟ, ସମାସ ଓ ସନ୍ଧି, ସଂଦର୍ଭ ଜନିତ ଅର୍ଥ) ଅର୍ଥବିଜ୍ଞାନ ।
- ଓଡ଼ିଆ ବାକ୍ୟ ବିନ୍ୟାସ : ପ୍ରକ୍ରିୟା ଓ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ।
- ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷାଗ୍ରହଣ, ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ତ ୍ୱର ଉପଯୁକ୍ତ ପ୍ରୟୋଗ ।

ଏକକ-୫- ପାଠ୍ୟ ବିଷୟବସ୍ତୁ ଶିକ୍ଷା ଶାସ୍ତ୍ରୀୟ ପ୍ରତିପାଦନ ।

(କ) ସାରଣୀରେ ଥିବା ବିଷୟବସ୍ତୁ ।

(ଖ) ସାରଣୀରେ ଥିବା ଶିକ୍ଷା ଶାସ୍ତ୍ରୀୟ ବ୍ୟବହାର ପକ୍ଷରେ ଦୃଷ୍ଟିକୋଣ ଦ୍ୱାରା ବିଶ୍ଳେଷିତ ହେବ ।

(କ) **ବିଷୟ ବସ୍ତୁ :**	(ଖ) **ଶିକ୍ଷା ଶାସ୍ତ୍ରୀୟ ଭି ିକ ଦୃଷ୍ଟିକୋଣ :**
ପଦ୍ୟ : ମାଟିର ମଣିଷ, ଗୋପ ପ୍ରୟାଣ, ହେ ମୋର କଲମ, ପଦ୍ମ । **ଗଦ୍ୟ :** ଜାତୀୟ ଜୀବନ, ପ୍ରକୃତ ବନ୍ଧୁ, ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ କଥା । **ବ୍ୟାକରଣ :** କାରକ, ବିଭକ୍ତି, ସମାସ (ଦଶମ ଶ୍ରେଣୀ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକକର ବିଷୟ) । ➢ ଭାଷା ପ୍ରକାରର, ଚିହ୍ନଟକରଣ (ନୂତନ ଶବ୍ଦ, ପରିପ୍ରକାଶ ଓ ବ୍ୟାକରଣର ଉପାଦାନ) । ➢ ଭାଷା ଶିକ୍ଷାରେ ଦକ୍ଷତା, ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ବିଷୟ ଉପସ୍ଥାପନାର ପରିସର ଚିହ୍ନଟକରଣ ।	ଭାଷା ପ୍ରକାରର ଚିହ୍ନଟକରଣ (ନୂତନ ଶବ୍ଦ, ପରିପ୍ରକାଶ, ବ୍ୟାକରଣ ଉପାଦାନ, ଉପ-ଭାଷା ବିକାଶରେ ଦକ୍ଷତା ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ବିଷୟ ସ୍ଥାପନାର ପରିସର ଚିହ୍ନଟକରଣ ।) ➢ ଶିକ୍ଷା ଗ୍ରହଣର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ : ➢ ପଦ୍ଧତି ଓ କୌଶଳ ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ । ➢ ଶିକ୍ଷାଦାନ ଅଧ୍ୟୟନ ପାଇଁ ଆବଶ୍ୟକୀୟ ସାମଗ୍ରୀର ପ୍ରସ୍ତୁତି । ➢ ଶିକ୍ଷାର୍ଜନ କ୍ରିୟାକଳାପର ରୂପାକୃତି ପ୍ରସ୍ତୁତି । ➢ ଶିକ୍ଷକ ଓ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀଙ୍କ ଭିତରେ ସାର୍ଥକ ମତ ବିନିମୟ ପାଇଁ ଯୋଜନା । ➢ ମୂଲ୍ୟାୟନ କୌଶଳ (ଗଠନ କ୍ଷମତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ) ।

ଶିକ୍ଷାବର୍ଷର କାର୍ଯ୍ୟ :

ପ୍ରତ୍ୟେକ ଗୁରୁ-ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ନିମ୍ନୋକ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଭିତରୁ ଯେ କୌଣସି ଦୁଇଟି କାର୍ଯ୍ୟ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ କରିବେ ।

- **5E & Icon models** ପଦ୍ଧତି ଅନୁସରଣ କରି ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକର ଗୃହୀତ ବିଷୟ ଉପରେ ୫ଟି ଶୈକ୍ଷିକ ଯୋଜନା ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବେ ।
- ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ପୁସ୍ତକର ଯେକୌଣସି ବିଷୟ ପ୍ରତି-ଚିତ୍ର ପ୍ରସ୍ତୁତ କରି ସେହି ପ୍ରତିଚିତ୍ର ଅନୁସାରରେ ପରୀକ୍ଷା ପ୍ରସଙ୍ଗର ବିକାଶ କରିବେ ।
- ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀମାନଙ୍କ ଭିତରେ ବନାନଗତ ସମସ୍ୟା ନିରୂପଣ କରି ତହିଁର ପ୍ରତିକାର ବ୍ୟବସ୍ଥା କରିବେ ।
- ଓଡ଼ିଆରେ ଏକ ରଚନା ଲେଖିବା ପାଇଁ ଶୀର୍ଷକ ବା ସହଶୀର୍ଷକ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବେ ।

ପ୍ରସ୍ତାବିତ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ :

- ଧଳ ଜି.ବି. (୧୯୭୨) ଇଂଲିଶ ଉଚ୍ଚାରଣ ଶିକ୍ଷା, କଟକ : ଫ୍ରେଣ୍ଡସ୍ ପବ୍ଲିସର ।
- ଧଳ. ଜି.ବି. (୧୯୭୪) ଧ୍ୱନି ବିଜ୍ଞାନ, ଭୁବନେଶ୍ୱର : ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ ସଂସ୍ଥା ।
- ମହାନ୍ତି, ବି. (୧୯୭୦) ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ଉତ୍ପ ି, ଫ୍ରେଣ୍ଡସ୍ ପବ୍ଲିସର୍ ।
- ମହାନ୍ତି, ଜେ. ବାରିକ ଏଣ୍ଡ ଖଣ୍ଡାଇ, ୟୁ (୧୯୮୩) ଓଡ଼ିଆ ଶିକ୍ଷାଦାନ ପଦ୍ଧତି, କଟକ, ନାଳନ୍ଦା ।
- ମହାପାତ୍ର ଡି. (୧୯୭୬) ଓଡ଼ିଆ ଧ୍ୱନିତ ୍ୱ ଓ ଶବ୍ଦ ସମ୍ଭାର, କଟକ, ଗ୍ରନ୍ଥମନ୍ଦିର ।
- ମହାପାତ୍ର. ଏନ୍ ଏଣ୍ଡ ଦାସ୍, ଏସ୍ (୧୯୪୩) ସର୍ବସାର ବ୍ୟାକରଣ, କଟକ : ନିୟୁଷ୍ଟୁଡେ ସ୍ ଷ୍ଟୋର ।
- ନାୟକ, ବି. (୧୯୭୪) ମାତୃଭାଷା ଶିକ୍ଷାଦାନ ପଦ୍ଧତି, ଭୁବନେଶ୍ୱର : ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ ସଂସ୍ଥା ।
- ପାଢ଼ୀ, ବି. (୧୯୭୨) ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ରୂପତ ୍ୱ, ବ୍ରହ୍ମପୁର : ପୁସ୍ତକ ମନ୍ଦିର ।
- ରାଉତ, ପି.ସି. (୧୯୮୬) ମାତୃଭାଷା ଶିକ୍ଷାଦାନ ପଦ୍ଧତି, ଯାଜପୁର, ସରସ୍ୱତୀ ପ୍ରି ର୍ସ ।
- ସାହୁ, ବି. (୧୯୭୫) ଭାଷା ବିଜ୍ଞାନର ରୂପରେଖା, କଟକ, ଫ୍ରେଣ୍ଡସ୍ ପବ୍ଲିସର୍ ।
- ଷଡ଼ଙ୍ଗୀ, ଏନ୍ (୨୦୦୧) ବୃହତ୍ ଓଡ଼ିଆ ବ୍ୟାକରଣ କଟକ: ସତ୍ୟନାରାୟଣ ବୁକ୍‌ଷ୍ଟୋର୍ ।
- ତ୍ରିପାଠୀ, କେ.ବି. (୧୯୭୭), ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ତ ୍ୱ ଓ ଲିପି କ୍ରମ ବିକାଶ, ଭୁବନେଶ୍ୱର : ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ ସଂସ୍ଥା ।

❑❑❑

इकाई : 1 : समाज में विविधता, असमानता, उपांतिकता

(Diversity, Inequality & Marginalization in Society)

- भाषा, संस्कृति, धर्म, समाज -आर्थिक वर्ग, नैतिक वर्ग में विविधता के संदर्भ में भारतीय समाज ।
- समाज में असमानता के कारण और उनके समाज-सांस्कृतिक तथा शैक्षिक तात्पर्य ।
- शिक्षा के सार्वजनीकरण में बाधाओं के रूप में भेदभाव और कम-महत्व प्रदान ।
- विविधता, असमानता और कम-महत्त्व प्रदान से संबंधित कारणों को जानने में शिक्षा, विद्यालय और शिक्षकों की भूमिका ।

इकाई : 2 : शिक्षा में संवैधानिक व्यवस्था, नीतियाँ और अधिनियम :

(Constitutional Provisions : Policies & Acts in Education)

- शिक्षा में विविधता, असमानता और कम महत्त्व प्रदान करने में उत्पन्न विवादीय विषयों का समाधान करने के लिए संवैधानिक व्यवस्था और मूल्य ।
- इन बाधाओं को दूर करने की नीतियाँ और कार्यक्रम :

  राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 1968 और 1986/92 सर्वशिक्षा अभियान (SSA), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA), ओड़िशा में बहुभाषिक शिक्षा पर राज्य नीतियाँ (2014) ।
- प्रवेश, नामांकन, अवधारण और शिक्षा में गुणात्मक कला के संदर्भ में नीतियों के कार्यान्वयन में समस्याएँ ।

इकाई : 3 : बाल-अधिकार और मानव-अधिकार :

(Child Rights & Human Rights)

- मानव-अधिकार : मानव अधिकारों की संकल्पना और प्रतिज्ञा-पत्र (मानव-अधिकारों की सार्वजनिक घोषणा) मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था ।
- बाल-अधिकार : संकल्पना, और बाल-अधिकार, बाल-अधिकार की सुरक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था, बाल-अधिकार पर राष्ट्रसंघ का सम्मेलन (1989) ।
- शिक्षा में बाल-अधिकार की सुरक्षा के लिए प्रोत्साहन : RCFCE Act - 2009 (शिक्षा अधिकार अधिनियम (RTE Act)) ।

इकाई : 4 : शिक्षा के लिए सार्वभौमिक विषय :

(Global concerns for Education)

- पर्यावरणीय शिक्षा, संदर्भ, संकल्पना, उद्देश्य, क्षेत्र और युक्तियाँ ।
- जीवन कौशल की शिक्षा, संकल्पना और महत्व, केन्द्रीय जीवन-कौशल (विश्व स्वास्थ्य संगठन-(WHO) द्वारा संस्तुत अध्येता के जीवन-कौशल को विकसित करने के लिए विद्यालय, शिक्षकों और समुदाय की भूमिका, राष्ट्रीय कौशल ।
- शिक्षा को गैर सरकारी और सार्वभौम करना : अर्थ, समसामयिक शिक्षा की रूपरेखा पर उनका प्रभाव (पाठ्यचर्या, शिक्षण और प्रबंधन के संदर्भ में) ।
- शांति शिक्षा : संकल्पना, आवश्यकता और युक्तियाँ ।

इकाई : 5 : शिक्षा में गुणात्मक विषय :

(Quality concerns in Education)

- गुणात्मक शिक्षा : संकल्पना, आयाम और सूचक ।
- गुणात्मक शिक्षा के निर्धारक कारक ।
- विद्यालय में गुणात्मक शिक्षा के विकास के लिए प्रोत्साहक तत्त्व : विकेन्द्रीकरण योजना, नवीन सामग्री शिक्षण, और शिक्षकों की दक्षता-वृद्धि, शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में सुधार, समुदाय की संपृक्ति आदि ।
- विद्यालय में गुणात्मक शिक्षा के विकास में विद्यालय, शिक्षकों और समुदाय की भूमिका ।